सम्पादकीय 2
अपसंस्कृति के प्रलोभन और आकर्षण से समाज को बचाना होगा

वृक्षारोपण मास 3
पूरे देश में चल रहा है बृहद् वृक्षारोपण अभियान

दुनिया के विविध देशों में हो रहा है देव संस्कृति का विस्तार 6

संस्कारधानी जबलपुर में तरु पुत्र महायज्ञ **एक लाख पेड़ लगाए जा रहे हैं** 7

गुरु पूर्णिमा 8
जो बुद्धि से बोध की यात्रा कराये, वही सद्गुरु होते हैं।
– डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 अगस्त 2024

वर्ष : 37, अंक : 04
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 अगस्त 2024
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

विश्व-मानव की अखंड अंतरात्मा

युगऋषि, वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य

संकीर्णता की कारा तोड़ो

विश्व मानव की आत्मा एक और अखंड है। समस्त जड़-चेतन उसी के अंतर्गत अवस्थित हैं। इस आत्मा में अपनी एक दिव्य आभा, स्वर्गीय ज्योति जगमगाती है। अनेक मल-आवरणों ने उसे ढक रखा है। यदि वह ज्योति इन आवरणों को चीरकर अपने शुद्ध स्वरूप में जगमगाने लगे, तो उसका आलोक जहाँ भी पड़े, वहीं आनंद का परम आह्लादकारी दृश्य दिखाई दे सकता है। इस प्रकाश की सीमा में आने वाली हर वस्तु स्वर्गीय बन सकती है। ऐसी बहुमूल्य ज्योति हमारे अंदर मौजूद है। स्वर्ग की सारी साज-सज्जा हमारे भीतर प्रस्तुत है, पर अविद्या के प्रतिरोधी तत्त्वों ने उसे भीतर ही अवरुद्ध कर रखा है। फलस्वरूप मानव प्राणी स्वयं नारकीय स्थिति में पड़ा हुआ है और वैसा ही नरकतुल्य वातावरण अपने चारों ओर बनाए बैठा है।

आत्मा स्वार्थ की संकुचित सीमा में अवरुद्ध होकर आज खंडित हो रही है। हर व्यक्ति अपने को दूसरों से अलग, खंडित देखता है, फलस्वरूप चारों ओर संघर्ष और कलह का वातावरण उत्पन्न होता है।

वस्तुतः हम सब एक हैं, अखंड हैं, सब एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, एक का सुख-दुःख, दूसरे का सुख-दुःख है। उठना है तो सबको एक साथ उठना होगा, सुख ढूँढ़ना है तो सबको उसे बाँटना होगा। खंडित व्यक्ति स्वार्थ की संकुचित सीमा में रहकर अपने शरीर के लिए कुछ भी, कितना ही इकट्ठा क्यों न कर ले, पर इससे उसे कोई चैन न मिलेगा। जब तक हम 'अपने को सबमें और सबको अपने में' न देखने लगेंगे, तब तक मानव अपनी महानता से, मानवता से वंचित ही बना रहेगा।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाएँ

एक-दूसरे के प्रति आत्मीयता, ममता, स्नेह, उदारता, क्षमा, करुणा की दृष्टि से देखें और जो कुछ अपने पास है, उसका लाभ दूसरों को देने के लिए प्रस्तुत रहें, तभी मनुष्य की मनुष्यता सार्थक हो सकती है। आध्यात्मिकता का संदेश है कि हम में से हर कोई अपने भीतर दृष्टि डाले, अंतर्मुखी होकर देखे कि उसके भीतर कितनी प्रचुर मात्रा में दैवी संपत्ति भरी पड़ी है। यदि वह उसे जान ले, देख ले और उसका सदुपयोग करने लगे, तो मरने के बाद नहीं, इसी जीवन में आज ही स्वर्ग का आनंद ले सकता है। यह कथा-कल्पना नहीं, वरन् सुनिश्चित तथ्य है कि अपने आपको जान लेने पर मनुष्य सब कुछ जान सकता है। अपने आपको सुधार लेने पर संसार की हर बुराई सुधर सकती है। अपने को बना लेने पर बाहर के जगत में सब कुछ बन सकता है, अपने को विकसित कर लेने पर बाहर की सारी गिरावट उत्कृष्टता में परिणत हो सकती है। व्यक्ति महान बने, समाज महान बने तथा सारी वसुधा महानता से ओत-प्रोत हो, यह मिशन लेकर हमको उठना है। जब तक हम जीवित हैं, तब तक इसी प्रयत्न में लगे रहेंगे।

दूसरे हम से भिन्न नहीं, हम दूसरों से भिन्न नहीं, इसी मान्यता में अध्यात्मवाद का सारा रहस्य सन्निहित है। दूसरों की पीड़ा जब अपनी पीड़ा लगने लगे, दूसरों को सुखी और समृद्ध देखकर जब अपने भीतर संतोष और हर्ष की लहर लहराए, तब समझना चाहिए कि हम आध्यात्मिकता के वास्तविक स्वरूप को पहचानने और ग्रहण करने की स्थिति में पहुँच रहे हैं। जब तक व्यक्ति अपने को समाज से भिन्न समझता है, लोकहित से अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को अधिक महत्त्व देता है, तब तक वह मानवीय आदर्शों से पतित ही माना जाएगा।

हम सब एक हैं

आत्मा अखंड है। हम सब एक ही नाव के यात्री, एक ही मंजिल के राही हैं, एक ही डाल पर रहने वाले पक्षी, एक ही बिल में रहने वाले चींटी-चींटे, परस्पर एक ही सूत्र में बँधे हुए हैं। सबका सुख-दुःख एक है। यदि संसार में पाप बढ़ेगा, तो उसके बुरे प्रतिफलों से पुण्यात्माओं को भी कष्ट सहना पड़ेगा। पेड़ गिर पड़ें तो उस पर रहने वाले सभी पक्षी आश्रयविहीन होंगे, बिल में पानी भर जाए तो उसमें रहने वाले सभी कीड़े संकट में पड़ेंगे। मानव जाति का भाग्य एक ही लिपि में लिखा गया है। यदि उत्थान होना है, सुख मिलना है तो वह सामूहिक ही हो सकता है। चार लोग अमीर रहना चाहें और सब गरीबी भुगतें, यह स्थिति देर तक नहीं रह सकती। चाहे साम्यवाद हो, चाहे अध्यात्मवाद, दोनों ही दृष्टिकोणों से यह गर्हित माना जाएगा और इसे बदलने का प्रयत्न किया जाएगा।

आत्मा एक व्यापक तत्त्व है, वह अनंत और अखंड है। पानी की हर लहर पर एक अलग सूरज चमकता दीखता है, पर वस्तुतः असंख्यों सूर्य कहाँ होते हैं? एक ही सूर्य की आभा तो अगणित लहरों पर स्वतंत्र प्रतिबिंब जैसी दीखती है। आत्मा भी एक है,

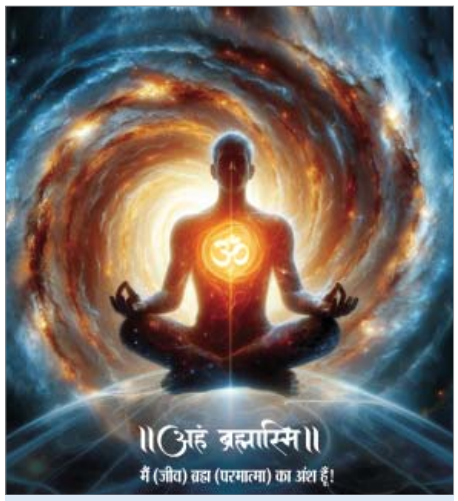

मानव जाति का भाग्य एक ही लिपि में लिखा गया है। यदि उत्थान होना है, सुख मिलना है तो वह सामूहिक ही हो सकता है। चार लोग अमीर रहना चाहें और सब गरीबी भुगतें, यह स्थिति देर तक नहीं रह सकती। चाहे साम्यवाद हो, चाहे अध्यात्मवाद, दोनों ही दृष्टिकोणों से यह गर्हित माना जाएगा और इसे बदलने का प्रयत्न किया जाएगा।

उसकी अखंड ज्योति एक है। हम लहरों पर चमकने वाले प्रतिबिंबों की भाँति अलग भले ही दिखाई दें, पर वस्तुतः हम सब एक हैं। एक ही ज्वाला की अगणित चिनगारियाँ विभिन्न शरीरों में जलती दीखती हैं। एक ही बिजलीघर की प्रचंड धारा अनेक बल्बों में चमकती है, पर धारा का उद्गम एक है।

द्वैत से अद्वैत की ओर

इस एकता को जितनी जल्दी हम समझ लें, उतना ही उत्तम है। वेदांत का अद्वैत सिद्धांत ही सत्य है। द्वैत मिथ्या है। द्वैत को मिटाकर अद्वैत्त की प्राप्ति के लिए ही अध्यात्म-शास्त्र और साधना-विज्ञान का आविर्भाव हुआ है। जीव जब अपनी सत्ता को भुला करके ईश्वर में लीन हो जाता है, तब समाधि का, मुक्ति का सुख मिलता है। लौकिक जीवन में भी सुख-शांति का यही मार्ग है। व्यक्ति अपने संकुचित स्वार्थों की पूर्ति की शैली में सोचना छोड़कर समाज की, समूह की बात सोचने लगे तो सर्वांगीण मुक्ति का वातावरण विनिर्मित हो सकता है। राजनीतिक स्वतंत्रता, आर्थिक स्वतंत्रता, सामाजिक स्वतंत्रता, धार्मिक स्वतंत्रता आदि स्वतंत्रताओं के विविध आंदोलन चलते रहते हैं। आत्मा स्वतंत्र है, वह बंधन में नहीं रहना चाहती। जब छोटी-सी चिड़िया तक पिंजड़े में बंद रहने की पराधीनता स्वीकार नहीं करती और अवसर मिलते ही उन्मुक्त आकाश में उड़ जाती है, तो आत्मा ही क्यों पराधीन रहे? स्वाधीनता की उसकी भूख स्वाभाविक है। यह भूख आत्मिक स्वतंत्रता में ही जाकर पूर्ण होती है। व्यक्ति छोटे से शरीर के लिए, छोटे से कुटुंब के लिए ही सब कुछ सोचे और संसार की कठिनाइयों की ओर से आँखें बंद कर ले, तो यह संकीर्णता, सीमाबद्धता, स्वार्थपरता ही कही जाएगी। प्राणी इसी भव-बंधन में बँधा हुआ जन्म-मरण के झूले में झूलता रहता है।

मानवीय उत्कर्ष का राजमार्ग

संकुचित स्वार्थों की सीमा में अवरुद्ध व्यक्ति तुच्छ है। जो अपनी ही बात सोचता है, अपने ही दुःख से दुःखी और अपने ही सुख से सुखी है, वह अभागा प्राणी पानी की एक बूँद की तरह है, जिसका अस्तित्व उपहासास्पद ही रहता है। समुद्र में अनेक बूँदों का समूह रहता है, इसलिए समुद्र भी महान है और उसकी हर बूँद भी धन्य है। सूर्य अपनी ज्योति को अपने घर में ही प्रकाशित नहीं रहने देता, वरन् उसकी किरणें लोक-लोकांतरों तक निःस्वार्थ भाव से बिखरी रहती हैं। इसी से सविता को देवता कहते हैं। वे मनुष्य भी देवता ही हैं, जो ससीमता के बंधन तोड़कर असीम बनते जा रहे हैं, जिन्होंने स्वार्थ को परमार्थ में परिणत करने का निश्चय कर लिया है।

इस संसार का भाग्य और भविष्य एक ही नाव में रखा हुआ है। विज्ञान की प्रगति ने इस एकता को और भी अधिक घनिष्ठ कर दिया है। इसलिए हमें सुख और दुःख की, लाभ और हानि की, उत्थान और पतन की, जीवन और मरण की समस्या पर व्यक्ति की दृष्टि से नहीं, समूह की, समाज की, संसार की दृष्टि से विचार करना चाहिए। जिसमें सबकी भलाई है, उसी में अपनी भलाई हो सकती है। जिसमें सबका सुख और संतोष है, उसी में हमें भी सुख-शांति मिल सकती है। अपने को सुखी बनाने की इच्छा करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को विस्तृत दृष्टि से देखना चाहिए और आत्मा की अखंड ज्योति को एक सीमित क्षेत्र तक संकुचित न रखकर विस्तृत, विशाल क्षेत्र में फैलने देना चाहिए। सबके सुख में ही हमारा सुख सन्निहित है।

पुस्तक 'समाज की अभिनव रचना' से संकलित

अपसंस्कृति के प्रलोभन और आकर्षण से समाज को बचाना होगा

लोगों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने के लिए प्रेम, सेवा, सहयोग के पथ पर निरंतर बढ़ते रहने की आवश्यकता है

इन दिनों विश्व मानवता अपने अस्तित्व के समक्ष खड़ी अनेक चुनौतियों से जूझ रही है। आज की परिस्थितियों में सामाजिक विकृतियाँ वैसी ही वीभत्स और अनियंत्रित होती जा रही हैं, जैसी कि पूर्व में अनेक बार होती रही हैं। इस तरह की परिस्थितियों पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए ही परमात्मचेतना ने समय-समय पर अवतार लिए हैं। वर्तमान समय में भी यह परम्परा दोहराई गई है। परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी विश्व मानवता को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने के लिए इस धरा पर अवतरित हुए। वे अकेले ही नहीं आए, युग निर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित प्रत्येक कार्यकर्त्ता के रूप में युग परिवर्तन के दैवी प्रयोजन में सहयोगी रहीं देवात्माओं को भी साथ लेकर आए हैं। उन्होंने हम सबको एक अंश का प्रज्ञावतार कहा है। आवश्यकता है कि हमें अपने दिव्य स्वरूप का बोध हो और जिस कार्य के लिए परमात्मसत्ता ने हमें चुना है, उसे पहचानें, समाज को अवांछनीयताओं से बचा कर सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने के अपने नैतिक दायित्वों का ईमानदारी और तत्परता के साथ पालन करें।

वर्तमान समय में मानवता के समक्ष तीन प्रमुख संकट खड़े दिखाई देते हैं। 1. पर्यावरण संकट, 2. वैज्ञानिक प्रगति का दुरुपयोग-वैश्विक युद्धोन्माद और 3. देव संस्कृति पर हो रहा अपसंस्कृति का प्रचण्ड आक्रमण।

प्रकृति रूठ गई है

पर्यावरण संकट प्रकृति के साथ हो रही ज्यादती और छेड़छाड़ का परिणाम है। इन दिनों उत्तराखण्ड और हिमाचल के पहाड़ों पर बादल फटने की जितनी घटनाएँ हो रहीं हैं, वह आश्चर्यचकित कर देती हैं। पहले कभी-कभी एकाध जगह बादल फटने की घटनाएँ सुनाई देती थीं, आज तो एक दिन में चार-चार जगह बादल फट रहे हैं। लेह में गरमी बढ़ने से कुछ ही दिनों में हवाई जहाज की बीसियों उड़ानें रद्द करनी पड़ी। गरमी से राहत पाने के लिए लोग कश्मीर की सैर पर जाया करते हैं। अब वहाँ भी तेज गरमी से लोग परेशान हैं, वर्षाऋतु में पारा 37 डिग्री तक पहुँच रहा है। केरल में भूस्खलन से गाँव के गाँव तबाह हो गए। मक्का में बाढ़ आ रही है। अमेरिका प्रकृति की मार से बुरी तरह परेशान है। भारत की ही तरह चीन में बाढ़ ने तांडव मचा रखा है। इस तरह की न जाने कितनी असामान्य घटनाएँ केवल भारत में ही नहीं, पूरे विश्व में घट रही हैं।

यह सब अनायास नहीं है। देवभूमि उत्तराखण्ड और हिमाचल प्रदेश ऋषि-मुनियों की एकांत तप साधना के लिए विख्यात रहे हैं। आज यहाँ के तीर्थस्थल पर्यटन के केन्द्र बनते जा रहे हैं। कुछ दशक पहले ही वहाँ पहुँचने वालों की संख्या हजारों में हुआ करती थी, आज तरह-तरह की सुविधाएँ हो जाने के कारण वहाँ लाखों लोग पहुँच रहे हैं। लेह, लद्दाख जैसे दुर्गम स्थानों पर भी लाखों सैलानी पहुँच रहे हैं। सैलानियों के लिए जो सुविधाएँ जुटाई जा रही हैं, वे प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ के बिना संभव नहीं हैं। दूसरी ओर राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए पर्वतों को चीरकर सुरंग, सड़क और रेलमार्ग का जाल बिछाया जाना अनिवार्य होता जा रहा है। इस छेड़छाड़ से इंसान भले ही सुख अनुभव करता हो, लेकिन प्रकृति तो अपनी नाराजगी का खुले आम प्रदर्शन कर रही है। यही स्थिति रही तो अगले दिनों मानवता को प्रकृति का कितना कोप झेलना पड़ेगा, कहा नहीं जा सकता।

वैज्ञानिक प्रगति के अभिशाप

अनियंत्रित वैज्ञानिक प्रगति भी भस्मासुर की भूमिका निभा रही है। अब साइकिल और बैलगाड़ियों का युग नहीं रहा, लेकिन धरती का पेट चीरकर ईंधन निकालने और मोटर गाड़ियों की सैर करने के बदले स्वास्थ्य के लिए खतरनाक गैसों के उत्सर्जन का दंश भी तो मानवजाति ही झेल रही है। औद्योगिक क्रान्ति ने स्वर्ग जैसी सुविधाएँ मानव को दी हैं, लेकिन बढ़ते प्रदूषण के कारण शरीर बीमारियों का घर बनता जा रहा है। मशीनों के आ जाने से अब पहले की तरह श्रम करने की आवश्यकता नहीं रही, लेकिन लोगों के घुटने भी तो खोखले होते जा रहे हैं। शहरों में सुविधाएँ बढ़ीं, लेकिन सुकून घट गया। धरती की पैदावार बढ़ी, लेकिन खाद्य वस्तुओं में जहर बढ़ता गया।

अब पहले की तरह युद्ध तीर-तलवार से नहीं लड़े जाते, लेकिन नित्य बरसते गोला-बारूदों से केवल वे लोग ही नहीं मर रहे, जिन पर वे बरस रहे हैं, बल्कि पर्यावरण पर पड़ते उनके दुष्प्रभाव के दंश को समूची सृष्टि झेल रही है।

अपसंस्कृति के आघात

वर्तमान युग का सबसे बड़ा संकट देव संस्कृति पर हो रहा अपसंस्कृति का सतत आक्रमण है। मानव को महामानव और देव मानव बनाने वाली भारतीय संस्कृति पर इन दिनों प्रत्यक्ष और परोक्षरूप से, जाने-अनजाने इतने प्रचण्ड आक्रमण हो रहे हैं, जिससे प्रतीत होता है कि इंसान इन दिनों स्वयं ही अपनी कब्र खोदने पर उतारू हो गया है। अपनी महान संस्कृति से अनभिज्ञ इंसान देखा-देखी नशा, मांसाहार, आरामतलबी, कामचोरी, मुफ्तखोरी, भ्रष्टाचार, फिजूलखर्ची, दिखावा जैसे अवगुणों को अपनी शान समझने लगा है। बड़प्पन की होड़ में वह नैतिकता, मानवता और महानता को ताक पर रखता चला जा रहा है।

दूसरी ओर विधर्मी लोग हमारे सामाजिक ताने-बाने को पूरी तरह छिन्न-भिन्न कर देना चाहते हैं। सनातन धर्म पर तरह-तरह के आघात कर लोगों की सनातन आस्थाओं को कमजोर करने के प्रयास हो रहे हैं। राजनीतिक स्वार्थों के चलते सामाजिक विकास के नाम पर परस्पर भेदभाव बढ़ाने के कुचक्र रचे जा रहे हैं। इन कुचक्रों से बचाकर देव संस्कृति के प्रति आस्थाओं का पोषण करते हुए समाज को भ्रम, भेद और भटकावों से बचाना आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है, आज का युगधर्म है। लोगों के चिंतन को बदलकर जीवनशैली में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। अपसंस्कृति के आकर्षण और प्रलोभनों में फँसकर सनातन संस्कृति से दूर होते जा रहे समाज को बचाने के प्रयास हमें करने होंगे। इसके लिए हमें अपनी संस्कृति की गौरव-गरिमा से परिचित होना चाहिए तथा घर-घर पहुँचकर इसकी महानता को समझाना चाहिए। अपसंस्कृति का जाल बिछाने वाले विधर्मियों से समाज को बचाया नहीं गया तो यह केवल भारत के लिए ही नहीं, बल्कि विश्व मानवता के समक्ष भी एक बड़ा संकट खड़ा हो जाएगा।

सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा

अपनी संस्कृति की महानता को समझना हो तो हमें मैगस्थनीज के इंदिक ग्रंथ में उद्धरित इस घटना से सीख लेनी चाहिए। इसमें लिखा है :-

जब सिकंदर भारत पर आक्रमण करने के लिए निकला तब उसके गुरु अरस्तू ने आदेश दिया था कि भारत से लौटते समय दो उपहार लाना-एक गीता तथा दूसरा कोई एक दार्शनिक संत। सिकंदर जब वापस लौटने लगा तब उसने अपने ओनियोक्रोटस नामक एक सैनिक को आदेश दिया कि भारत से किसी संत को ढूँढ़कर ससम्मान ले आओ।

सैनिक दण्डी स्वामी, जिसका उल्लेख ग्रीक भाषा में 'डैडीमींग' के रूप में हुआ है, को मिला। दण्डी स्वामी से मिलकर सिकन्दर के दूत ने कहा, ''आप हमारे साथ चलें, सिकन्दर महान आपको मालामाल कर देंगे। अपार वैभव आपके चरणों में होगा।'' अपनी सहज मुस्कान में दण्डी स्वामी ने उत्तर दिया, ''हमारे रहने के लिए शस्य श्यामला भारत की पावन भूमि, पहनने के लिए वल्कल वस्त्र, पीने के लिए गंगा की अमृत धार तथा खाने के लिए एक पाव आटा पर्याप्त है। हमारे पास संसार की सबसे बड़ी सम्पत्ति आत्मधन है।'' इस धन की दृष्टि से दरिद्र तुम्हारा सिकन्दर हमें क्या दे सकता है?

शक्ति एवं सम्पत्ति के दर्प से चूर सिकन्दर ने जब सैनिक का वार्तालाप सुना तो विस्मित रह गया। आध्यात्मिक संपदा के धनी इस देश के समक्ष नतमस्तक होकर चला गया।

यह कथानक भारतीय संस्कृति के उस महान दर्शन को स्पष्ट करता है, जिसके आधार पर यजुर्वेद का पद (7/14) आता है-'सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा' अर्थात् यह प्रथम संस्कृति है, जो विश्वव्यापी है। यह वह संस्कृति है जिसने सारी विश्व मानवता को उत्कर्ष की राह दिखाई, मानव को महामानव और देवमानव बनना सिखाया।

दण्डी स्वामी का कथानक बताता है कि स्वयं को जानो। जीविकोपार्जन सहज है, अर्जित करना है तो आत्मधन अर्जित करो। अपार धन-वैभव से मन की तुष्टि, तृप्ति, शान्ति संभव नहीं है, आत्मसंतोष की प्राप्ति में ही परम सुख निहित है। इसके लिए जीवन को पेट-प्रजनन के लिए खपाते हुए अनैतिक मार्ग पर चलने की आवश्यकता नहीं है, 'सादा जीवन-उच्च विचार' की रीतिनीति अपनाते हुए बड़े उद्देश्यों के लिए जीने तथा आदर्शोन्मुख जीवन जीते हुए महानता के पथ पर अग्रसर होने की आवश्यकता है।

भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ

'समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान' नामक वाङ्मय में परम पूज्य गुरुदेव ने भारतीय संस्कृति की उन विशेषताओं पर प्रकाश डाला है, जिनके आधार पर इसने पूरे विश्व को प्रभावित किया है, यह विश्व के कोने-कोने में पहुँची है। आज भी विश्व में गीता, वेद, उपनिषद् आदि ग्रंथों के सूत्रों पर शोधकार्य हो रहे हैं।

वैचारिक स्वतंत्रता : भारतीय संस्कृति मानवता का धर्म सिखाती है, जिसका लक्ष्य है आत्मोत्थान और लोककल्याण। वैचारिक स्वतंत्रता इसकी बहुत बड़ी विशेषता है। इसमें प्रत्येक विचार पद्धति को पनपने देने की छूट है। एक ही सत्य को पाने के अनेक मार्ग और अनेक विधान हैं। उसमें आस्तिकवाद और नास्तिकवाद, द्वैत-अद्वैत जैसी सभी दार्शनिक मान्यताएँ पनपती हैं।

संसार में दो तरह की धार्मिक मान्यताएँ हैं। कुछ लोगों का दुराग्रह है कि हमारे धर्मग्रंथ, विचार पद्धति और पैगंबर/संदेश वाहक ही सर्वश्रेष्ठ हैं, सब इन्हें ही मानें। यह दुराग्रह असहिष्णुता एवं हिंसा को बढ़ावा देने वाला है। दूसरी ओर भारतीय संस्कृति करुणा और भाव संवेदनाओं पर आधारित है। इसमें अपनी आस्था के अनुरूप विविध मत, पंथ, संप्रदायों को मानने की वैचारिक स्वतंत्रता है।

कर्मफल के सिद्धान्त की मान्यता : कर्मफल की मान्यता भारतीय संस्कृति की विशेषता है। अन्य धर्म जहाँ अमुक मत का अवलम्बन अथवा अमुक प्रथा, प्रक्रिया अपना लेने मात्र से ईश्वर की प्रसन्नता और अनुग्रह की बात कहते हैं, वहाँ भारतीय धर्म में कर्मफल की मान्यता को प्रधानता दी गई है और दुष्कर्मों का प्रायश्चित्त करके समाज को पहुँचाई गई क्षति की पूर्ति करने को कहा गया है।

कर्मफल की मान्यता नैतिकता और सामाजिकता की रक्षा के लिए नितान्त आवश्यक है। मनुष्य की चतुरता अद्भुत है। वह सामाजिक विरोध और राजदंड से बचने के अनेक हथकंडे अपनाकर कुकर्मरत रह सकता है। ऐसी दशा में किसी सर्वज्ञ-सर्वसमर्थ सत्ता ही कर्मफल व्यवस्था का अंकुश ही उसे सदाचरण की मर्यादा में बाँधे रह सकता है। भारतीय संस्कृति में पुनर्जन्म की मान्यता है, इस जन्म के कर्मों का फल अगले जन्मों में भी भोगना पड़ता है, जिसके कारण व्यक्ति पुण्य कर्मों में प्रवृत्त होता और पाप कर्मों से बचता है।

आत्मा परमात्मा का अंश है : भारतीय संस्कृति में आत्मा को परमात्मा का अंश माना गया है। शारीरिक कलुष एवं मानसिक कल्मषों के भव-बंधनों से छूटकर उदात्त दृष्टिकोण अपनाना एवं जीवनमुक्ति प्राप्त करना चरम लक्ष्य ठहराया गया है। ब्रह्मविद्या का तत्त्वज्ञान 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की, 'परद्रव्येषु लोष्ठवत्' की, 'मातृवत् परदारेषु' की प्रेरणाओं को हृदयंगम करने की प्रेरणा देता है।

मानवमात्र एक समान : इस अंक के प्रथम पृष्ठ के आलेख से स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति 'मानवमात्र एक समान, एक पिता की सब संतान' के सूत्र को आत्मसात करने की प्रेरणा देती है। यह सृष्टि के कण-कण में ईश-चेतना का वास देखती है। यह प्राणिमात्र की भलाई चाहती है।

सद्भावना : भारतीय संस्कृति का विस्तार सारे विश्व में हुआ है, परंतु हम जहाँ भी गए हैं, वहाँ दूध में शक्कर की तरह घुल-मिल कर रहे हैं। हमने कभी दूसरों पर आधिपत्य स्थापित करने का प्रयास नहीं किया है, जबकि कुछ अन्य विख्यात् धर्म साम्राज्यवाद को प्रोत्साहित करते और विश्व में अस्थिरता और आतंक का वातावरण विनिर्मित करते दिखाई देते हैं। आज भी सारे विश्व में भारतीयों का बोलबाला है। हमने अपने ज्ञान, गुण और श्रम से सभी देशों की सुख, शान्ति और प्रगति में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

इन सब अच्छाइयों के बावजूद हमारे देशवासी अपसंस्कृति के आकर्षण और प्रलोभनों में फँसकर अपने धर्म से विमुख होते दिखाई दे रहे हैं। इस अवांछनीय परिवर्तन में विधर्मियों का षड़यंत्र तो है ही, अंधकार युग में घुस पड़ी अनेक प्रथा-परंपराएँ भी जिम्मेदार हैं, जो आज भी जनजीवन में घुली-मिली दिखाई देती हैं।

परम पूज्य गुरुदेव का कथन है कि वैश्विक समस्याओं का समाधान भारतीय संस्कृति के सूत्र-सिद्धांतों में ही निहित है। इनका वैश्विक विस्तार करना होगा, लेकिन इससे पूर्व अपने देशवासियों को विधर्मियों के कुचक्र से बचाने के लिए घर-घर जाना होगा, जिसकी चर्चा क्रमशः अगले अंक में करेंगे।

संस्कृति बची तो मानवता बचेगी। संस्कृति की रक्षा आज का सबसे बड़ा युगधर्म है। आइये! पावन रक्षाबंधन पर्व पर इस तथ्य को अनुभव करें और इस दिशा में सार्थक कदम बढ़ायें। **(क्रमशः)**

वृक्षारोपण मास : धरती माँ को हरी चूनर ओढ़ाने के अभियान में जुट गए युगसेनानी

अश्वमेध उपवन में वृक्षारोपण

पूरी मुम्बई के 700-800 कार्यकर्त्ता अभियान में शामिल हुए

टिटवाला, ठाणे। महाराष्ट्र

गायत्री परिवार मुम्बई ने अश्वमेध महायज्ञ की स्मृति में यज्ञ से पाँच वर्ष पूर्व ही मुम्बई के समीप टिटवाला में अश्वमेध स्मृति उपवन की स्थापना की थी। पूरे मुम्बई के कार्यकर्त्ता तभी से बड़े समर्पित भाव से इस उपवन में सतत बृहद वृक्षारोपण अभियान चला रहे हैं। गायत्री परिवार केवल पौधारोपण ही नहीं करता, बल्कि जमीन की खुदाई, उसे उपजाऊ बनाने के लिए खाद डालना, सिंचाई के लिए वॉटर पंप लगाना, चिड़ियों के लिए घोंसले लगाना जैसे कार्य भी किये जाते हैं।

इस अश्वमेध स्मृति उपवन में वर्ष में एक बार सामूहिक वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इस वर्ष यह कार्यक्रम गुरु पूर्णिमा की वेला में 20 जुलाई को सम्पन्न हुआ। 700 से 800 परिजनों ने इसमें भाग लिया। उस दिन भारी बारिश थी, इसके बावजूद सबने मिलकर पूरी श्रद्धा, निष्ठा के साथ हजारों पौधे लगाकर अभियान को सफल बनाया।

सफाई व वृक्षारोपण के लिए किया सतत श्रमदान

गुरु पूर्णिमा पर्व से आरंभ हुआ वृक्षारोपण अभियान

गुरुग्राम। हरियाणा

गायत्री परिवार गुरुग्राम इस वर्ष वृक्षारोपण मास में सेक्टर 65 में वृक्षारोपण अभियान चला रहा है। कार्यकर्त्ताओं ने इस क्षेत्र की पाँच दिनों तक अच्छी तरह से सफाई की, तत्पश्चात् पर्यावरण संरक्षण में उपयोगी एवं फलदार 12 वृक्षों की पौध लगाई। शाखा ने इसके साथ ही गुरु पूर्णिमा से वृक्षगंगा अभियान का शुभारंभ कर दिया है।

जन्मशताब्दी वर्ष में जनचेतना जगाने का विशिष्ट अभियान

प्रज्ञा अभियान के 12,733 सदस्य बने

मात्र नौ गोष्ठियों में मिली यह शानदार सफलता

इन दिनों गुजरात के गाँव-गाँव में ज्योति कलश यात्रा पहुँच रही है। दूसरी ओर श्रद्धेया शैल जीजी के विशेष आह्वान पर नवयुग की सृजन चेतना को प्रत्येक गाँव के घर-घर तक पहुँचा देने के शानदार संकल्प उभर रहे हैं। विभिन्न शाखाओं के कार्यकर्त्ता पाक्षिक प्रज्ञा अभियान के माध्यम से मिशन की गतिविधियों की जानकारी लोगों को देकर उन्हें परम वंदनीया माताजी की जन्म शताब्दी की विभिन्न योजनाओं से जोड़ने के लिए उत्साहित हो रहे हैं।

श्रद्धेया जीजी का विशेष संदेश और आशीर्वाद लेकर पाक्षिक प्रज्ञा अभियान (गुजराती) के संपादक मण्डल के वरिष्ठ सदस्य श्री प्रकाश भाई मोदी के नेतृत्व में श्री सुनील बंशीधर, रमेशभाई जोशी, अश्विन भाई जानी, हिरेन भाई रावल की टोली मिशन की पत्रिकाओं की सदस्यता अभियान का लक्ष्य लेकर 26 जून 2024 को गुजरात पहुँची। उन्होंने 15 दिनों में विभिन्न जिलों के 9 स्थानों पर गोष्ठियाँ लेकर श्रद्धेया जीजी का संदेश सुनाया। परिणाम बहुत उत्साहवर्धक रहे। शाखा संचालकों ने सबके सहयोग से घर-घर जाकर प्रज्ञा अभियान पहुँचाने और फिर उन सबको क्रमशः मासिक पत्रिका 'युगशक्ति गायत्री (गुजराती)' का सदस्य बनाने का संकल्प लिया है।

(1) साबरकांठा जिले के हिम्मतनगर में डॉ. ए.एस. पटेल और योगिनी बेन पण्ड्या की मुख्य उपस्थिति में 1100 पाक्षिक की सदस्यता ली गई। (2) गायत्री शक्तिपीठ विजापुर, जिला महेसाणा में डॉ. ए.जे. पटेल एवं श्री कनुभाई रावल की मुख्य उपस्थिति में 500 सदस्य बने। (3) अरवल्ली जिले में गायत्री चेतना केन्द्र मोडासा में गोष्ठी सम्पन्न हुई। वहाँ श्री हरेशभाई कंसारा और श्री किरीटभाई सोनी के सहयोग से 400 पाक्षिक की सदस्यता ली गई। (4) कुकरवाड़ा, महेसाणा में श्रीमती चंद्रिकाबेन पटेल एवं श्री अम्बालाल पटेल ने 131 सदस्य बनाए। (5) गायत्री शक्तिपीठ नवसारी में श्री हितेश भाई देसाई ने 1500 पाक्षिक की सदस्यता ग्रहण की। (6) गीर सोमनाथ के उपजोन समन्वयक श्री हरिसिंह डोडिया और श्री जगमाल भाई ने 801 पाक्षिक की सदस्यता ग्रहण की। (7) राजकोट जिले के वांकानेर में श्री हरिसिंह डोडिया और श्री भरत सिंह जाडेजा की उपस्थिति में 1500 सदस्य बने। (8) जामनगर में प्रज्ञा अभियान के 1500 सदस्य बने, जिसमें श्री हरिसिंह डोडिया और सुश्री प्रीति बेन की मुख्य भूमिका रही। (9) खेड़ा, आणंद में श्री जशुभाई प्रजापति, श्री विनोदभाई भट्ट और श्री हिमांशु भाई ने 5301 पाक्षिक की सदस्यता ग्रहण करते हुए अद्वितीय सक्रियता का परिचय दिया है।

हर क्षेत्र में चल पड़ा है वृक्षारोपण अभियान

जतारा, टीकमगढ़। मध्य प्रदेश

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर गायत्री परिवार जतारा के युवाओं ने जतारा मऊरानीपुर रोड पर बने प्लांट एरिया के पहाड़ी क्षेत्र में वृक्षारोपण किया। उन्होंने सागौन, महुआ, नीम, पीपल आदि के 65 पौधे रोपे। कार्यकर्त्ताओं ने सामूहिक श्रमदान से गड्ढे खोदे और सिंचाई की।

रिजर्व फॉरेस्ट के वनपाल श्री जे.पी. प्रजापति ने पहाड़ी के चारों ओर कँटीले तारों की फेंसिंग

कर लगाए गए पौधों की जानवरों से सुरक्षा करने की बात कही। उन्होंने गायत्री परिवार के कार्य की सराहना करते हुए कहा कि हर व्यक्ति एक पेड़ लगाकर उसे मित्र या पुत्र मानकर उसका संरक्षण करे तो क्षेत्र में लाखों वृक्ष लगाए जा सकेंगे।

1000 तुलसी और 100 वृक्षों की पौध रोपी

डोंगरगाँव, तिरोड़ा। महाराष्ट्र

दिया, डोंगरगाँव ने दिनांक 17 जुलाई 2024 को तुलसी क्रान्ति का दूसरा चरण सम्पन्न किया। इस अवसर पर कार्यकर्त्ताओं ने 1,000 से अधिक तुलसी के पौधे लगाए अथवा बाँटे और 100 से अधिक अन्य पेड़ जैसे आम, बादाम और पीपल लगाए। डॉ. विक्रम कटरे, विवेक बैस, आर.डी. पटले, देवलाल शरणागत, नितिन पटले, शिक्षक परमार जी एवं जोगा जी तथा कई स्थानीय युवाओं ने वृक्षारोपण अभियान में भागीदारी की।

दिया, डोंगरगाँव ने इससे पूर्व अभियान का शुभारंभ 7 जुलाई से किया था। उस दिन कार्यकर्त्ताओं ने तुलसी के बीज रोपे और पहाड़ी पर वृक्षारोपण के लिए मड बॉल तैयार किए। शाखा द्वारा तुलसी तथा वृक्षारोपण का यह अभियान डोंगरगाँव में पहाड़ों पर, स्कूलों, प्रशासनिक कार्यालयों और खुले स्थानों पर चलाया जा रहा है।

माता चामुंडा की पहाड़ी पर रोपे 51 वृक्ष

देवास। मध्य प्रदेश

जिलाधीश श्री ऋषव गुप्ता के संरक्षण, मार्गदर्शन में गायत्री परिवार देवास द्वारा माताजी की टेकरी परिक्षेत्र में बृहद पौधारोपण अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में 20 जुलाई को माताजी की टेकरी सेक्टर-8 में 51 पौधों का रोपण किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी डॉ. राजेन्द्र सक्सेना, शीलनाथ धुनी आश्रम

संरक्षक श्री माधवानंद जी, गायत्री परिवार के श्री देवेन्द्र गिरि तथा गायत्री परिवार के युवाओं की एक विशाल टोली ने भाग लिया।

धार्मिक व सामाजिक संगठनों के परस्पर सहयोग से मोक्षधाम के समीप वृक्षारोपण

नीम का थाना। राजस्थान

गायत्री परिवार शाखा उदयपुरवाटी ने देवशयनी एकादशी के उपलक्ष में मोक्ष धाम के समीप टोडरमल कॉलोनी में गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया। इसमें लोक शांति एवं देश की खुशहाली की कामना के साथ यज्ञाहुतियाँ अर्पित की गईं। देश के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले शहीदों को श्रद्धांजलि स्वरूप विशेष आहुतियाँ भी दी गईं। एक दर्जन से अधिक लोगों ने देवदक्षिणा स्वरूप व्यसन मुक्ति

का संकल्प लिया। यज्ञ के समापन के पश्चात् वृक्षारोपण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

यह कार्यक्रम सर्वोदय कार्यकर्ता भाई बद्री प्रसाद तंवर की देखरेख में सम्पन्न हुआ। ब्रह्माकुमारी सुनीता बहिन ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। श्री बजरंग लाल सोनी ने यज्ञ संचालन किया।

विद्यार्थियों ने बटगाँव में लगाई 100 वृक्षों की पौध

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

गायत्री विद्यापीठ राजनांदगाँव के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने प्राचार्या श्रीमती शैलजा नायर के मार्गदर्शन में ग्राम खैरा बटगाँव के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, शासकीय प्राथमिक शाला बटगाँव, पशु आश्रय स्थल में 100 फलदार एवं औषधीय गुण वाले पौधे रोपे।

11,000 वृक्ष लगाने का संकल्प

उमरी, कुक्षी, धार। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ उमरी ने इस वर्ष 11000 वृक्षारोपण का संकल्प लिया है। गुरु पूर्णिमा पर्व से अभियान का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर उपस्थित सैकड़ों परिजनों ने वृक्षारोपण अभियान में हिस्सा लिया।

ज्ञातव्य है कि गायत्री शक्तिपीठ उमरी द्वारा पूर्व में भी सघन वृक्षारोपण किया गया है, जिसके प्रभाव से पूरा परिसर वृक्षों से आच्छादित हो चुका है।

दुर्गम क्षेत्रों में वृक्षारोपण के लिए हो रहा है ड्रोन का उपयोग

इंदौर के सांसद श्री शंकर लालवानी ड्रोन में बीज डालते हुए

इंदौर। मध्य प्रदेश

इंदौर शहर को पूरे देश में सबसे स्वच्छ शहर होने का गौरव प्राप्त है। यह गौरव प्रशासन की सजगता और नगरवासियों के सहयोग का परिणाम है। अब इस शहर और आसपास के क्षेत्र में हरित इंदौर के संकल्प के साथ वृक्षारोपण के विशिष्ट प्रयास हो रहे हैं।

इंदौर के सांसद श्री शंकर लालवानी ने ड्रोन के माध्यम से वृक्षारोपण कराया। यह कार्य इंदौर की ड्रोन बनाने वाले स्टार्टअप पाइजर्व टेक्नोलॉजी द्वारा वृक्षारोपण के लिए विशेष रूप से अपग्रेड किए गए ड्रोन का उपयोग किया गया है। इसके माध्यम से ऐसे दुर्गम क्षेत्रों में पीपल के बीज (सीड बॉल) बिखेरे गए हैं, जहाँ पौधारोपण करना आसान नहीं होता। सांसद महोदय ने बताया कि पीपल सर्वाधिक ऑक्सीजन देने वाला वृक्ष है, इसलिए पीपल के पौधों का बृहद स्तर पर रोपण उनके द्वारा किया गया है।

गाँव-गाँव वृक्षारोपण अभियान

पौधशाला में तैयार किए जा रहे हैं सैकड़ों पौधे

लखीमपुर खीरी। उत्तर प्रदेश

गुरु पूर्णिमा से लखीमपुर खीरी शाखा के युवाओं ने हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी पूरे जोश और उत्साह के साथ वृक्षारोपण अभियान आरंभ कर दिया। इसके लिए शक्तिपीठ पर ही माता भगवती देवी वृक्ष बैंक तैयार कर सैकड़ों की संख्या में पौधे तैयार किए गए हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए समर्पित कार्यकर्त्ता इन पौधों को तरह-तरह के श्रद्धा संवर्धनपरक कार्यक्रम आयोजित कर विभिन्न स्थानों पर रोप रहे हैं। 15 जुलाई को ग्राम खुर्रमनगर में वृक्षारोपण अभियान चलाया गया। अनेक लोगों ने अपने घर के द्वार पर छायादार, फलदार और शोभा बढ़ाने वाले वृक्षों की पौध लगाई।

अब आप 01334-311001 पर फोन कर शान्तिकुञ्ज की नई स्वचालित फोन व्यवस्था (आईवीआर) से शान्तिकुञ्ज के विभिन्न विभागों से सीधा सम्पर्क कर सकते हैं।

गुरु पूर्णिमा पर प्रायः प्रत्येक शाखा द्वारा आयोजित किए गए श्रद्धाञ्जलि समारोह

गुरु के नाम पर 10-10 वृक्ष लगाने के संकल्प दिलाए

इन्दौर। मध्य प्रदेश

गुरु पूर्णिमा पर्व के उपलक्ष्य में गायत्री शक्तिपीठ, केशरबाग व कनाड़िया में गुरु पूजन, 9 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ, संस्कार व संकल्प के कार्यक्रम आयोजित हुए। इन कार्यक्रमों में हजारों महिला, पुरुष व बच्चों ने भाग लिया। दोनों शक्तिपीठों के प्रभारी क्रमशः श्री सजल तिवारी एवं पं. शंकरलाल शर्मा ने बताया कि गुरु पर्व समारोह में उपस्थित सभी श्रद्धालुओं को गुरु के नाम पर 10-10 वृक्ष लगाने का संकल्प दिलाया गया। यज्ञ में उपस्थित युवा दम्पतियों को श्रेष्ठ, संस्कारवान संतान पाने के लिए पुंसवन संस्कार से लेकर बच्चों के सभी संस्कार परम पूज्य गुरुदेव की प्रेरणाप्रद संस्कार परम्परा के साथ सम्पन्न कराने का आह्वान किया।

इन्दौर में गुरु पूर्णिमा पर्व पर नौ कुण्डीय यज्ञ का संचालन करती बहिनें

125 बंदियों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ली

बड़वानी। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार की बड़वानी शाखा द्वारा स्थानीय केन्द्रीय कारागार में आत्म परिष्कार शिविर चलाया जा रहा है। इसी के अंतर्गत गुरु पूर्णिमा पर्व बड़े श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर 125 शिविरार्थी बंदियों ने परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी को गुरुरूप में वरण किया। उन्होंने गुरु दक्षिणा के रूप में व्यसन, क्रोध, ईर्ष्या जैसी बुराइयों को त्यागने के संकल्प लिए।

कारागार में सहायक जेलर श्री आर.एस. वर्मा ने गायत्री परिवार द्वारा आयोजित गुरु पूर्णिमा उत्सव की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार बंदियों के विचारों को परिष्कृत करने का प्रभावशाली कार्य कर रहा है। आपने आज गायत्री मंत्र की दीक्षा देकर बंदी भाईयों का मनोबल बढ़ाया है। बंदी गृह में स्थापित श्रीराम पुस्तकालय से बंदीगण बहुत कुछ सीख रहे है। सहायक जेल अधीक्षक कुसुम बघेल, मुख्य प्रहरी विक्रम पाटीदार एवं जेल स्टाफ द्वारा आयोजन में पूर्ण सहयोग किया गया।

गायत्री मंत्र की दीक्षा लेते बंदीगण

जन्म शताब्दी वर्ष को लक्ष्य कर भावी सक्रियता की प्रेरणा दी

देवघर। झारखण्ड

गायत्री शक्तिपीठ डाबर ग्राम देवघर में गुरु पूर्णिमा पर्व नौ कुंडीय यज्ञ के माध्यम से हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। यज्ञ संचालकों ने परिजनों को व्यसनों से मुक्त एवं श्रेष्ठ संस्कारों से युक्त परिवार निर्माण की प्रेरणा दी। 40 परिजनों ने गायत्री महामंत्र की दीक्षा ली। विचार क्रांति अभियान में भागीदारी के लिए युवा पीढ़ी का आह्वान किया गया।

यह कार्यक्रम शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री त्रिलोचन साहू की विशेष उपस्थिति में सम्पन्न हुआ, जिसमें 600 से अधिक परिजनों की भागीदारी रही। देवघर, दुमका, गोड्डा एवं जामतारा जिले के उपस्थित 100 से भी अधिक सक्रिय प्राणवान कार्यकर्त्ताओं को परम वंदनीया माताजी की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य

गुरु पूर्णिमा के दिन उप जोन के चारों जिलों में स्थित 25 से अधिक प्रज्ञा संस्थानों में इसी तरह के प्रेरणाप्रद कार्यक्रम आयोजित किए गए।

में आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों को गति प्रदान करने की प्रेरणा दी गई।

संभाग के हर प्रज्ञा संस्थान में विशाल कार्यक्रमों का आयोजन

अलवर। राजस्थान

अलवर संभाग में दिनांक 21 जुलाई 2024 को अलवर, भरतपुर, करौली, बहरोड़, डीग, खैरथल तिजारा जिलों के सभी गायत्री परिजनों ने अपने-अपने गायत्री संस्थानों में पूरी श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ गुरु पूर्णिमा पर्व मनाया। इन केन्द्रों पर अखण्ड जप, पर्व पूजन, यज्ञ, दीपयज्ञ आदि कार्यक्रम आयोजित किए गए थे। सभी केन्द्रों पर दीक्षा एवं अन्य संस्कार हुए, गायत्री परिवार के अलावा बड़ी संख्या में अन्य श्रद्धालुओं ने भी इन कार्यक्रमों में भाग लिया।

गायत्री शक्तिपीठ करौली कुण्ड अलवर में 18 दीक्षा संस्कार हुए। पर्यावरण संरक्षण के लिए विशेष सहयोग करने वाले परिजनों को मुख्य प्रबंध ट्रस्टी डॉ. सरोज गुप्ता द्वारा सम्मानित भी किया गया। 100 तुलसी के पौधे भी वितरित किये गए।

करौली जिले के हिन्डोन सिटी में एक मैरिज हाउस में नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ आयोजित किया गया, जिसमें हिन्डोन सहित आसपास के गाँवों के

परिजनों ने सैकड़ों की संख्या में सम्मिलित होकर आहुतियाँ दीं।

गायत्री शक्तिपीठ वैर (भरतपुर) में 18 से 21 जुलाई तक प्रज्ञा पुराण कथा एवं नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ गुरु पूर्णिमा पर्व मनाया गया।

अन्य प्रज्ञा संस्थानों में भी इसी प्रकार के भावभरे कार्यक्रम सम्पन्न हुए, जिनमें हजारों लोगों ने नवयुग की संरचना में अपनी भावभरी भागीदारी के संकल्प लिए।

प्रबुद्ध युवाओं ने दी श्रद्धाञ्जलि

बैंगलुरू। कर्नाटक

गायत्री चेतना केन्द्र बैंगलुरु में मनाए गए गुरु पूर्णिमा पर्व में लगभग 500 से 600 परिजनों ने भागीदारी की। यज्ञीय कार्यक्रम का संचालन रीता रजक, सायुज्जिता, शिवांगी मिश्रा और गायत्री गोयल ने किया। अश्विनी कटरे ने परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माता जी को 'शिव-शक्ति' का युग्म बताते हुए गुरुरूप में उनका वरण करने की प्रेरणा दी।

'मेरा कोई न सहारा बिन तेरे, गुरुवर सांवरिया मेरे...' आदि श्रद्धासिक्त प्रज्ञागीतों से सारा वातावरण गायत्रीमय-गुरुमय हो गया। संस्कार परम्परा के पुनर्जीवन पर विशेष बल दिया गया। दीक्षा, जन्मदिवस, पुंसवन, अन्नप्राशन, नामकरण, विद्यारंभ, मुंडन आदि 20 संस्कार सम्पन्न हुए। परिजनों ने अपने आराध्य परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के श्रीचरणों में अपनी श्रद्धांजलि, पुष्पांजलि और भावांजलि अर्पित की।

बैंगलुरु में यज्ञ संचालन करती बहिनों की टोली

निर्माणाधीन शक्तिपीठ में यज्ञशाला का लोकार्पण

बाँसवाड़ा। राजस्थान

गायत्री परिवार बाँसवाड़ा ने महाराणा प्रताप सर्कल के समीप निर्माणाधीन गायत्री शक्तिपीठ परिसर में गुरु पूर्णिमा पर्व मनाया। इस अवसर पर जिले की प्रायः सभी तहसीलों से आये सैकड़ों परिजनों की उपस्थिति में शक्तिपीठ परिसर में सामूहिक जप व पंच कुण्डीय यज्ञ के कार्यक्रम आयोजित हुए। यज्ञशाला का लोकार्पण एवं वृक्षारोपण भी किया गया।

यज्ञशाला का लोकार्पण मुख्य अतिथि संभागीय आयुक्त श्री नीरज के पवन, विशिष्ट अतिथि श्री राजेश भावसार, प्रिंस पटेल और नगेन्द्र दोसी ने किया। पुष्कर से आई श्री श्याम सिंह की टोली ने गुरु महिमा गाई तथा भावी सक्रियता के संकल्प उकेरे। यज्ञ का संचालन जिला संयोजक श्री सुरेश जोशी और श्रीमती आशा द्विवेदी ने किया। सर्वश्री सुभाष कौशल, डॉ. युधिष्ठिर त्रिवेदी, डॉ. दिनेश भट्ट, लक्ष्मीकान्त त्रिवेदी और कृष्णकांत चौबीसा यज्ञ के मुख्य यजमान थे।

गुरु दक्षिणा-श्रद्धांजलि

अमरेली। गुजरात

श्री गायत्री ज्ञान मंदिर अमरेली में गुरु पूर्णिमा पर्व पर गुरु दक्षिणा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। अमरेली शहर एवं तहसील के भाई-बहिन बड़ी संख्या में कार्यक्रम में उपस्थित हुए। सभी ने सामूहिक जप साधना, गुरु पादुका पूजन तथा पंच कुंडीय यज्ञ में भाग लेते हुए अपनी पावन गुरुसत्ता के बताए जीवन पथ पर निरंतर बढ़ते रहने की प्रेरणा प्राप्त की, श्रद्धा सुमन समर्पित किए। शाखा परिजनों ने गुरु दक्षिणा स्वरूप ₹11,000/- का अंशदान अपने गुरुद्वारे शान्तिकुञ्ज को भेजा।

अनेक शाखाओं ने गुरु पूर्णिमा समारोहों के विस्तृत समाचार भेजे हैं। यहाँ वे संक्षेप में ही प्रकाशित हुए हैं। कुछ समाचार इस अंक के ई-संस्करण में भी दिए जा रहे हैं।

श्रद्धा की शानदार परिणतियाँ

संतरामपुर के यज्ञ में वृक्ष पूजन और वितरण की झाँकी

संतरामपुर। गुजरात : गायत्री शक्तिपीठ संतरामपुर में गुरु पूर्णिमा समारोह का भव्य आयोजन हुआ। इसमें 1000 से अधिक श्रद्धालुओं ने गुरु पूजन एवं गायत्री यज्ञ में भाग लेते हुए लोकमंगल के लिए अपनी भावनाएँ समर्पित कीं। कार्यक्रम की उपलब्धियाँ अत्यंत शानदार थीं।

दीक्षा : 150 श्रद्धालुओं ने गुरु दीक्षा ली, अन्य संस्कार भी हुए।

400 वृक्षों की पौध बाँटी : सभी श्रद्धालुओं को परिवार में जितने घर, उतने वृक्षों की पौध लगाने और उनका पोषण, संरक्षण करने के संकल्प दिलाए गए। श्री सोमाभाई डामोर तथा श्रीमती जशोदाबेन ने अपनी दिवंगत पुत्री रेणुका की पावन स्मृति में 400 फलदार वृक्षों की पौध का दान किया।

50 नई बाल संस्कार शाला चलाने के संकल्प लिए गए।

गाँव-गाँव दीपयज्ञों के आयोजन : संतरामपुर शाखा ने अखण्ड दीप की शताब्दी सन् 2026 तक गाँव-गाँव दीपयज्ञों के आयोजन की शृंखला चलाने का संकल्प लिया है।

मंत्री जी ने ध्यान साधना कक्ष निर्माण के लिए अनुदान दिया

कुरुक्षेत्र। हरियाणा

श्री वेदमाता गायत्री शक्तिपीठ नरकातारी रोड़, कुरुक्षेत्र में गुरु पूर्णिमा पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि माननीय श्री सुभाष सुधा जी, राज्य मंत्री हरियाणा सरकार थे। उन्होंने शक्तिपीठ में ध्यान साधना हॉल बनाने लिए गायत्री परिवार को 11 लाख रुपए का अनुदान देने की घोषणा की। शक्तिपीठ के व्यवस्थापक श्री धर्मपाल शर्मा ने इस सहृदयता के लिए उनका हार्दिक आभार प्रकट किया। सर्वश्री मंजीत शर्मा, बलभद्र कौशिक, राज गौड़, अनिल जैन, मोहनलाल धीमान, कृपाल सिंह त्यागी आदि गणमान्य एवं सैकड़ों श्रद्धालुओं ने यज्ञाहुतियाँ समर्पित करने के साथ पावन गुरुसत्ता को अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किए।

दो-दो गाँव गोद ले रहे हैं कार्यकर्त्ता, तरुपुत्र महायज्ञ भी आयोजित

पडखुरी, सीधी। मध्य प्रदेश

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट आश्रम पडखुरी में 5 कुंडीय यज्ञ तथा तरु पुत्र महायज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में उपस्थित श्रद्धालुओं ने दो-दो ग्राम गोद लेकर उनमें जन्मशताब्दी वर्ष के निमित्त आयोजन करने और हर माह के अंतिम रविवार को 12 घंटे का समय आश्रम हेतु प्रदान करने का संकल्प लिया।

बेलहाई में परम पूज्य गुरुदेव स्वयं पधारे थे। इस कार्यक्रम ने उन स्मृतियों को ताजा कर दिया।

सायंकाल गायत्री प्रज्ञा पीठ बेलहाई में दीप यज्ञ रखा गया था। पडखुरी उप जोन प्रभारी श्री प्रभाकांत तिवारी ने दीप यज्ञ संचालन के साथ पूज्य गुरुदेव के जीवन पर प्रकाश डालते हुए युगधर्म का पालन करने और अपने शिष्यत्व को सार्थक करने की प्रेरणा दी। श्री सिद्ध मुनि मिश्रा एवं श्री रवीन्द्र सिंह ने भी अपने विचार रखे।

भाग्यवान का एक ही लक्षण है-दूरदर्शिता से काम लेना। अभागे की एक ही पहचान है तुरन्त का लाभ देखकर कुकर्म करना और भविष्य के परिणाम पर विचार न करना।

शिक्षण संस्थानों में चल रहा है कन्या/किशोर कौशल विकास का बृहद् अभियान

108 व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रम और 8 दिव्यता जागरण कार्यशालाएँ हुईं

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

गायत्री प्रज्ञापीठ हेमंत नाथ पर दिनांक 14 जुलाई 2024 को कन्या/किशोर कौशल अभिवर्धन अभियान आरंभ करने के लिए बड़ी महत्त्वपूर्ण बैठक हुई। जिला कार्यवाहक डॉ. एस.एन. सचान ने समग्र योजना की विस्तार से जानकारी दी। शिक्षण संस्थानों में कार्यशालाएँ आयोजित करने पर चर्चा हुई। श्रीमती रानी सचान ने गायत्री शक्तिपीठों पर कार्यशालाओं के आयोजन का सुझाव दिया। बैठक में सर्वप्रथम प्रशिक्षक तैयार करने का निर्णय लिया गया।

स्कूल-कॉलेजों में होंगे कार्यक्रम

श्री शिवराम दीक्षित जी ने इस अभियान के 14 भाषण के सार प्रस्तुत किये। इन्हें जनजागरूकता, वैज्ञानिक प्रतिपादन और व्यक्तित्व विकास के तीन हिस्सों में बाँट कर ऐसी प्रभावशाली सामग्री तैयार करने का निर्णय लिया गया है, जो शिक्षण संस्थानों द्वारा आबंटित किये जाने वाले एक से डेढ़ घंटे के समय में ही विद्यार्थियों पर अपनी विशिष्ट छाप छोड़ सके। इस कार्य के लिए श्री अरुण श्रीवास्तव, श्री शिवराम दीक्षित, श्री यू.सी. बाजपेई एवं श्री प्रेमदत्त सारस्वत की टीम तैयार की गई है।

बैठक में श्री अरुण श्रीवास्तव ने अपने द्वारा 108 व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम एवं 8 दिव्यता जागरण कार्यशालाओं के आयोजित किए जाने की जानकारी दी। श्री अतुल सिंह ने 1000 की क्षमता वाले आई.ई.टी के ऑडिटोरियम एवं बीबीडी यूनिवर्सिटी, एसएमएस इंस्टिट्यूट में विशाल कार्यक्रमों के आयोजन का सुझाव दिया।

सुरक्षा, स्वास्थ्य, संस्कार और सभ्यता पर विचार मंथन

देवास। मध्य प्रदेश

इन दिनों मध्य प्रदेश के प्रत्येक जिले में बेटियों को संरक्षण और सुरक्षा देने हेतु कन्या कौशल शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इसी शृंखला में शासकीय हाई स्कूल इटावा में एक शिविर सम्पन्न हुआ।

श्री विक्रम सिंह चौधरी ने बताया कि युवा प्रकोष्ठ जिला समन्वयक श्री प्रमोद निहाले द्वारा शिविर में भाग ले रही बालिकाओं को नशामुक्त आदर्श समाज के निर्माण में सहयोगी बनने की प्रबल प्रेरणाएँ दी गईं। उन्हें भाई, पिता व परिवार के अन्य सदस्यों से जन्म दिवस पर उपहार के रूप में नशामुक्ति का संकल्प कराने के लिए प्रेरित किया गया।

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान की प्रांतीय जोन सह समन्वयक सुश्री लेखा राठौड़ ने फैशन और मोबाइल के आकर्षण में संयम बरतते हुए अपने जीवन का आदर्श प्रस्तुत करने की प्रेरणा दी। सुश्री लता खंडेलवाल, श्री रमेशचंद्र मोदी, श्री बाबूलाल खंडेलवाल ने युवावस्था को जीवन का स्वर्णिम काल बताते हुए उसका सदुपयोग करने की प्रेरणा दी।

प्राचार्या प्रतिभा गुप्ता ने गायत्री परिवार के समाजोत्थान के लिए किए जा रहे उत्कृष्ट प्रयासों की सराहना की।

जिला स्तरीय युवा कार्यकर्त्ता मंडल प्रशिक्षण शिविर

अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

सोंडवा तहसील के गायत्री प्रज्ञा पीठ छकतला में 26 जून को जिला स्तरीय युवा कार्यकर्त्ता मण्डल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। अलीराजपुर, जोबट, चन्द्रशेखर आजाद नगर, कट्ठीवाड़ा और सोंडवा तहसीलों के प्रत्येक मंडलों के सक्रिय युवा कार्यकर्त्ता इस शिविर में शामिल हुए। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता जिला समन्वयक श्री संतोष वर्मा ने युवाओं को समाज और राष्ट्र के कर्णधार बताते हुए धर्म तथा राष्ट्र के लिए समर्पित जीवन जीने की

प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि इसके लिए युवाओं को व्यसन, फैशन और टेंशन से बचाकर देव संस्कृति से जोड़ना होगा।

इसी शिविर में जिला युवा प्रकोष्ठ का पुनर्गठन कर सक्रिय युवाओं को दायित्व सौंपे गए, जनजागरण की योजनाएँ समझाई गईं।

गायत्री प्रज्ञापीठ की प्राण प्रतिष्ठा

बावेन, डीग। राजस्थान

7 जुलाई 2024 को कुम्हेर तहसील के गाँव बावेन में सात कुण्डीय गायत्री यज्ञ के साथ गायत्री प्रज्ञापीठ की प्राण प्रतिष्ठा हुई। इस अवसर पर गायत्री तपोभूमि मथुरा के व्यवस्था प्रभारी श्री प्रमोद शर्मा एवं युग निर्माण योजना पत्रिका के सह सम्पादक श्री सूर्यमणि तिवारी के नेतृत्व में माँ गायत्री, सरस्वती एवं दुर्गा माता के विग्रहों की प्राण प्रतिष्ठा की गई। इस आयोजन में बावेन ग्राम पंचायत के गाँवों के सरपंच सहित आस पास के कई गाँवों के श्रद्धालु सम्मिलित हुए।

कार्यक्रम के प्रारंभ में बावेन के सरपंच श्री शेर सिंह जाटव, भरतपुर के सेवानिवृत्त जिला उद्योग अधिकारी श्री गजराज सिंह तथा सेवानिवृत्त आयुर्वेदिक चिकित्सक श्री भगवान सिंह सोगरवाल के द्वारा देव पूजन किया गया। दोनों दिन के कार्यक्रम पंडित श्याम सुंदर शर्मा जी के निर्देशन में सम्पन्न हुए।

बावेन में चल रहा प्राण प्रतिष्ठा समारोह

14 से 17 नवंबर 2024 तक की तिथियों में गाँव बावेन में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन होना है। उसके पूर्व गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा के कार्यक्रमों के माध्यम से आसपास के पूरे क्षेत्र का सघन मंथन किया जा रहा है।

शिव मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा

जनमन में श्रद्धा और विश्वास जगाने के लिए घर-घर गायत्री उपासना एवं यज्ञ होने चाहिए -शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

बिलासपुर। हिमाचल प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ बिलासपुर में तीन दिवसीय शिव मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्राण प्रतिष्ठा समारोह सम्पन्न कराने शान्तिकुञ्ज से आई श्री शशिकांत सिंह की टोली ने नवनिर्मित साधना कक्ष का लोकार्पण भी किया।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि संत तुलसीदास ने मानवीय अंतःकरण में निहित उच्च आदर्शों के प्रति श्रद्धा और विश्वास को ही पार्वती और शिव कहा है। आज जन-मन में इन्हें प्रतिष्ठित करने के लिए घर-घर यज्ञ एवं गायत्री मंत्र की उपासना की आवश्यकता है। इसी से समाज में संस्कारों का उदय होगा, समाज श्रेष्ठ बनेगा।

नव प्रतिष्ठित शिव-पार्वती

इस प्राण प्रतिष्ठा समारोह में भारत ओलंपिक की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. मल्लिका नड्डा जी भी उपस्थित रहीं। उन्होंने गायत्री परिवार के साथ अपने कई दशकों के संबंधों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि गुरुदेव का साहित्य लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला रहा है।

प्राकृतिक उपचार एवं आहार प्रशिक्षण

केवलारी, सिवनी। म.प्र.

गायत्री शक्तिपीठ केवलारी में 5 दिवसीय प्राकृतिक उपचार एवं आहार प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। 13 जुलाई से आरंभ हुए इस शिविर में 63 शिविरार्थियों ने भाग लेते हुए जन्मभूमि आँवलखेड़ा से आए प्रशिक्षकों से बिना किसी औषधि के सहज जीवन जीते हुए स्वस्थ रहने के सूत्र समझे, सीखे। शक्तिपीठ पर आयोजित अपनी तरह के प्रथम शिविर का समापन कई गणमान्यों और शिविरार्थियों के संबंधियों, परिचितों की उपस्थिति में हुआ।

डॉ. जितेंद्र सिंह प्रज्ञेय ने शिविर की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्रकृति के साथ जीना बड़ा सहज है, लेकिन देश के बड़े शहरों में इसका भी व्यवसायीकरण होता

शिविर में प्राकृतिक विधियों से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते परिजन

जा रहा है। इसके विपरीत गायत्री परिवार ने शक्तिपीठों पर ऐसे प्रशिक्षण शिविर आयोजित कर प्राकृतिक चिकित्सा और आहार विद्या को सर्वसामान्य के लिए सहज सुलभ बनाने का लक्ष्य रखा है।

डॉ. जितेंद्र सिंह प्रज्ञेय ने बताया कि इस शिविर में योग, ध्यान, स्टीम थैरेपी, हॉट फूट बाथ, औषधि एनिमा, हॉट वाटर बैग थेरेपी, मिट्टी-पट्टी, अमृत पेय, गर्म-ठंडी पट्टी, फुट पेच, नस्य थेरेपी, कुंजल, जल नेती, रबर नेती, कटि स्नान, धूप स्नान, मड थैरेपी, आहार चिकित्सा, एक्यूप्रेशर चिकित्सा, थॉट थैरेपी आदि उपायों से जटिल रोगों का सहज उपचार हो जाता है। रक्तचाप, मधुमेह, मोटापा, माइग्रेन, घुटने तथा शरीर के विभिन्न स्थानों के असहनीय दर्द पर बिना ऐलापैथिक दवाओं के नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है।

भा.सं. ज्ञान परीक्षा का पुरस्कार वितरण

केवलारी, सिवनी। मध्य प्रदेश

केवलारी में युगऋषि के सैकड़ों नैष्ठिक शिष्यों ने पंच कुण्डीय यज्ञ के साथ गुरु पूर्णिमा पर्व मनाया। उसी दिन दोपहर को एक विशेष कार्यक्रम आयोजित कर भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के पुरस्कार दिए गए।

कार्यक्रम में शक्तिपीठ के मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री सुरेन्द्र साहू ने गायत्री परिवार व कामधेनु गौशाला के द्वारा समाज हित में किये जा रहे कार्यों की जानकारी दी। सभी अतिथि एवं उपस्थित जनमानस इन सेवा कार्यों से बहुत प्रभावित हुए। श्री विनोद

परीक्षा में सहयोगी, शिक्षक सम्मान प्राप्त करते हुए

बर्मन, तहसील समन्वयक ने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा की आख्या प्रस्तुत करते हुए बताया कि गतवर्ष केवलारी ब्लॉक से लगभग 7 हजार विद्यार्थी इस परीक्षा में शामिल हुए थे।

इस समारोह में केवलारी का नाम पूरे प्रदेश में रोशन करने वाली कु. मुनमुन राय (96.4 %) को विशेष सम्मान प्रदान किया गया। सभी स्कूलों में 10वीं व 12वीं में अग्रणी रहे विद्यार्थियों एवं सभी स्कूलों को भी सम्मानित किया गया।

जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में ग्राम प्रव्रज्या

मुजगहन, धमतरी। छत्तीसगढ़

परम वंदनीया माताजी के जन्म शताब्दी समारोह को लक्ष्य कर गायत्री महिला मण्डल द्वारा अपने गाँव में ग्राम प्रवज्या एवं दीप यज्ञ का आयोजन किया गया। प्रारंभ में महिला मण्डल द्वारा गीत एवं जयघोष के साथ ग्राम प्रव्रज्या की गई। इसके समापन पर गाँधी चौक के सांस्कृतिक मंच में दीप जलाकर

गायत्री मंत्र एवं महामृत्युंजय मंत्र के उच्चारण के साथ लोगों के सुख, समृद्ध एवं खुशहाल जीवन की कामना करते हुए दीप यज्ञ संपन्न कराया गया। जिला समन्वयक श्री दिलीप नाग की उपस्थित में बड़ी संख्या में कार्यकर्त्ताओं एवं ग्राम वासियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

यज्ञ में व्यसनमुक्त समाज के निर्माण का संदेश

हसनगंज, उन्नाव। उ.प्र.

गायत्रीपरिवार घोल, मुस्तफाबाद, तहसील हसनगंज द्वारा दिनांक 21 से 24 जून 2024 तक की तिथियों में नौ कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। इसके तीसरे दिन कन्या व युवा सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें ग्रामीण क्षेत्र के 500 से अधिक युवाओं व कन्याओं की भागीदारी रही। भीषण गर्मी

में भी सभी का उत्साह दर्शनीय था। व्यक्तित्व विकास व व्यसन मुक्ति कार्यशाला के मुख्य वक्ता श्री अरुण श्रीवास्तव ने प्राचीन ग्रंथों एवं शास्त्रों के उदाहरण देते हुए यज्ञ के वैज्ञानिक महत्त्व तथा प्राणीमात्र के लिए उसकी उपयोगिता को रेखांकित किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को अपने विद्यालय, परिवार तथा गाँववासियों को व्यसनमुक्त जीवन जीने के लिए प्रेरित करने के संकल्प दिलाए।

दुनिया के विविध देशों में हो रहा है देव संस्कृति का प्रचार-विस्तार

तैयार हो रही है युग पुरोहितों की टोली

गुरु पूर्णिमा पर विशाल आयोजन का संचालन किया

एडीलेड में यज्ञ, संस्कार अभियान का व्यापक विस्तार होगा

एडीलेड। ऑस्ट्रेलिया

गुरुपूर्णिमा के पावन अवसर पर अखिल विश्व गायत्री परिवार एडिलेड द्वारा फुलहम सामुदायिक केंद्र में नौ कुंडीय गायत्री यज्ञ का आयोजन किया गया। नगर के 300 से अधिक श्रद्धालुओं ने इस कार्यक्रम में भाग लेते हुए परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की, देव संस्कृति को विश्व संस्कृति बनाने में निरंतर योगदान देते रहने का संकल्प लिया।

समारोह में भारतीय संस्कृति को निरंतर बढ़ावा देने वाले महानुभाव श्री अनुज वशिष्ठ (सर्व ब्राह्मण समाज एडीलेड के अध्यक्ष), श्री सुरेंद्र पाल (प्लाइम्टन वॉर्ड के पार्षद), डॉ. गौरांग प्रजापति और श्री किशोर चंद्र (फुलहम सामुदायिक केंद्र के बोर्ड सदस्य) की गरिमामय उपस्थिति रही। सभी गायत्री परिवार की गुरुनिष्ठा, मानवता के उत्थान के लिए समर्पण, यज्ञ के स्वरूप और प्रस्तुत किए गए परम पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व और विचारों से बहुत प्रभावित हुए। ऐसे कार्यक्रम समय-समय पर होते रहें, ऐसे भाव अनेक श्रद्धालुओं ने व्यक्त किए।

विशाल समारोह का संचालन करने वाले नवप्रशिक्षित पुराहितों की टोली व यज्ञोपरांत आरती करते श्रद्धालु

10 सप्ताह की कड़ी मेहनत

यह सफलता अखिल विश्व गायत्री परिवार एडीलेड की कार्य समिति के सदस्यों की कड़ी मेहनत का परिणाम थी। उल्लेखनीय है कि समिति की सदस्या श्रीमती भावना प्रशांत चौधरी ने बताया कि वे परम वंदनीया माताजी की जन्म शताब्दी को ध्यान में रखते हुए नगर में गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना एवं संस्कार परम्परा के पुनर्जीवन के अभियान को गति देने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चला कर नगर में युग पुरोहितों की टोली तैयार कर रही हैं।

विगत 10 सप्ताह से अपने नगर में पुरोहित प्रशिक्षण का कार्यक्रम चला रही है। इसमें प्रशिक्षित 6 बहिनों ने यज्ञ कर्मकाण्ड सम्पन्न कराया और 9 बहिनों ने हर कुण्ड पर उपाचार्य की भूमिका बड़ी कुशलता से निभाई। तीन उभरते युग निर्माणी (की बोर्ड पर चि. प्रांश, तबले पर चि. कवीश और खंजरी पर चि. युवान) ने प्रज्ञागीत, मंत्र, आरती और यज्ञ महिमा के लिए संगीत वाद्ययंत्र सीखने, अभ्यास करने और बजाने के लिए कड़ी मेहनत की थी।

रूस में प्रबुद्धों-गणमान्यों के बीच पहुँच रहा है युगऋषि का संदेश

गुरु पूर्णिमा पर मानवीय आदर्शों के शिखर पुरुष को श्रद्धा सुमन समर्पित

इन दिनों शान्तिकुञ्ज से डॉ. ज्ञानेश्वर मिश्र, श्री मनीष जी, श्री भावसिंह तोमर और डॉ. गोपाल कृष्ण की टोली विचार क्रांति अभियान का सृजन संदेश लेकर रशिया प्रवास पर है। टोली को रशियन मूल के प्रबुद्ध लोगों के घर यज्ञ, संस्कार और देव स्थापना कराने में शानदार सफलता मिल रही है।

16 जुलाई को जीवनी ग्रेड में आयोजित मॉस्को कल्चरल फेस्टिवल में तीन कुण्डीय गायत्री यज्ञ किया गया, जिसमें सैकड़ों परिजनों ने भाग लिया। उन्होंने गायत्री एवं यज्ञ का दर्शन समझा तथा मिशन की गतिविधियों में भाग लेने के लिए उत्साहित हुए। परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के रूप में एक विराट अवतारी चेतना का परिचय पाकर सभी अभिभूत थे। इस ऐतिहासिक आयोजन में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने श्राद्ध-तर्पण संस्कार का महत्त्व बताया। कई लोग प्रभावित हुए, जिन्होंने अगले दिनों अपने घर में यज्ञ, दीपयज्ञ एवं श्राद्ध-तर्पण संस्कार कराए।

18 जुलाई 2024 के दिन शौलकोव्स्काया नामक नगर में कंस्ट्रक्शन इंजीनियर श्री आंद्रे एवं इंटीरियर डिजाइनर श्रीमती एल्विना के घर यज्ञ एवं दीपयज्ञ सम्पन्न हुआ। उन्होंने यज्ञ के साथ अपने पूर्वजों की शान्ति, सद्गति के लिए भारतीय संस्कृति के विधि-विधान से श्राद्ध तर्पण संस्कार कराते हुए असीम शान्ति और तृप्ति की अनुभूति की। यज्ञ की अलौकिक अनुभूति से विभोर यह दम्पति गायत्री मंत्र साधना एवं युग साहित्य के माध्यम से मिशन से जुड़ गया। उन्होंने अपने मित्र, परिचितों को भी इस पुनीत अभियान से जोड़ने का मन बनाया है।

ऐसा ही यज्ञ, दीपयज्ञ, श्राद्ध-तर्पण का कार्यक्रम इज्माईलोव्स्काया, मॉस्को में श्री इवान (आई.टी. सिस्टम एडमिनिस्ट्रेटर) एवं श्रीमती पॉलिन (इकोनॉमिस्ट) के घर भी सम्पन्न हुआ।

19 जुलाई को मॉस्को के प्रसिद्ध साउथ वेस्ट बिजनेस सेंटर (मीचूरीन्सकी प्रोस्पेक्टस) में रशियन बिजनेस प्रोफेशनल्स के बीच दीप यज्ञ संपन्न हुआ।

मॉस्को कल्चरल फेस्टिवल में हो रहा सामूहिक गायत्री महायज्ञ

विशिष्ट गणमान्यों को युग साहित्य भेंट करते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

गुरु पूर्णिमा पर्व मनाया

21 जुलाई को शान्तिकुञ्ज की टोली द्वारा मॉस्को के विश्व प्रसिद्ध रेड स्क्वायर के निकट आध्यात्मिक लिटेरिरी क्लब 'बेली अबलाका' में रशियन प्रबुद्ध वर्ग के मध्य गुरु पूर्णिमा पर्व मनाया गया। गायत्री मंत्र संकीर्तन संग दिव्य वातावरण में जिज्ञासु रशियन प्रबुद्ध वर्ग के सदस्यों को इस पवित्र दिवस की महत्ता और गुरु-गायत्री के दिव्य भाव से जोड़ते हुए अखिल विश्व गायत्री परिवार की गतिविधियों से अवगत कराया गया। उपस्थित जनों ने मानवता के आदर्शों के शिखर पुरुष परम पूज्य गुरुदेव के प्रति नतमस्तक हो अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किए।

अमेरिका में गुरु पूर्णिमा पर्व पर आयोजित हुए विशाल समारोह

डलास। यूएसए

अमेरिका के डलास के एकता मंदिर में (जहाँ गायत्री माता की मूर्ति प्रतिष्ठित है) और अलेक्जेंड्रिया में गुरु पूर्णिमा पर्व शान्तिकुञ्ज से पहुँची प्रो. प्रमोद भटनागर, श्री ओंकार पाटीदार, श्री सुरेन्द्र वर्मा की टोली के सान्निध्य में बहुत ही उत्साह-उमंग भरे वातावरण में मनाया गया। इस कार्यक्रम में दुबई, सेन एंटोनियो तथा कई प्रांतों से सैकड़ों मील की यात्रा कर प्रबुद्ध श्रद्धालु आए थे। कार्यक्रम का समापन दीपयज्ञ के साथ हुआ। प्रो. प्रमोद भटनागर ने समय दान, विचारों की शक्ति और गुरुदेव-माताजी का जीवन दर्शन सभी के सामने रखा।

शिकागो। यूएसए

गायत्री ज्ञान मंदिर के प्रांगण में 24 कुण्डीय यज्ञ के साथ गुरु पर्व मनाया गया। लगभग 600 श्रद्धालुओं ने इसमें भाग लिया, दीक्षा, यज्ञोपवीत और पुंसवन संस्कार संपन्न किए गए। कार्यक्रम के अंत में सभी ने सक्रियता के शुभ संकल्पों के साथ अपनी पावन गुरुसत्ता को श्रद्धासिक्त पुष्पांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में अधिक संख्या में युवा वर्ग की उपस्थिति उत्साहवर्धक थी।

शिकागो में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

भावभरी श्रद्धाञ्जलि

गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हुए शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता

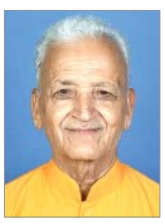

शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता 76 वर्षीय श्री सुखदेव शर्मा जी दिनांक 18 जुलाई 2024 को पावन गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गए। वे उत्तर प्रदेश में पीलीभीत जिले के कस्बा कलीनगर के मूल निवासी थे। पिछले कुछ माह से वे अस्वस्थ थे। अपनी धर्मपत्नी श्रीमती विमला शर्मा तथा बरेली निवासी सुपुत्री श्रीमती मृदुल मिश्रा के साथ नोएडा, उत्तर प्रदेश में रह रहे अपने सुपुत्र श्री आदित्य प्रकाश एवं पुत्र वधु श्रीमती प्रियंका शर्मा के यहाँ रहते हुए स्वास्थ्य लाभ ले रहे थे। उन्होंने एम्स, दिल्ली में जीवन की अंतिम श्वांस ली। उनकी अंतिम यात्रा शान्तिकुञ्ज से निकली और गंगातट पर अंतिम संस्कार हुआ।

श्री सुखदेव शर्मा जी की परम पूज्य गुरुदेव से पहली मुलाकात उत्तर प्रदेश के वन विभाग में नौकरी लगने के बाद ट्रेनिंग के समय आनन्द नगर, गोरखपुर में हुई थी। तब पूज्य गुरुदेव ने उनके सिर पर तीन बार हाथ फिराया। यह गुरुसत्ता का ऐसा शक्ति अनुदान था कि उसके बाद वे पूरी तरह से मिशन के लिए समर्पित हो गए।

स्व. श्री सुखदेव शर्मा जी सन् 1992 में अपनी धर्मपत्नी श्रीमती विमला देवी, शिक्षिका के साथ शान्तिकुञ्ज आ गए थे। तब से वे निरंतर टोलियों में जाते रहे। वर्तमान में वे पश्चिमोत्तर जोन में अपनी सेवाएँ दे रहे थे।

देसंविवि के प्रति कुलपति आदरणीय चिन्मय पण्ड्या जी का अमेरिका और यू.के. प्रवास

परम वंदनीया माताजी के जन्म शताब्दी वर्ष में (दो वर्ष बाद) अमेरिका में अश्वमेध महायज्ञ का आयोजन होने जा रहा है। शान्तिकुञ्ज से आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 26 जुलाई को इसके लिए ज्योति कलश लेकर अमेरिका पहुँचे। समाचार लिखे जाने तक उनके इस प्रवास में न्यूयॉर्क, न्यूजर्सी, जॉर्जिया, अटलांटा, ह्यूस्टन, फोनिक्स आदि शहरों में विविध कार्यक्रम हुए।

अमेरिका के बाद डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का यू.के. का प्रवास निर्धारित है। वहाँ भी जन्मशताब्दी के प्रयाज में कई कार्यक्रम होने हैं। पूरे प्रवास के समाचार अगले अंक में विस्तार से पढ़ें।

केन्या में किसी भी मंदिर की पहली महिला ट्रस्टी बनीं गायत्री परिवार की विद्या परिहार

गायत्री परिवार का गौरव

नैरोबी। केन्या : अखिल विश्व गायत्री परिवार की समर्पित कार्यकर्त्ता बहिन श्रीमती विद्या परिहार को वहाँ के सबसे प्राचीन श्री राम मंदिर नैरोबी की प्रबंधन समिति में ट्रस्टी नियुक्त किया गया है। परम पूज्य गुरुदेव के प्रति अनन्य भाव से समर्पित विद्या बहिन इसे अपनी गुरुसत्ता का विशिष्ट अनुदान मानती हैं, क्योंकि पहली बार ऐसा हुआ है जब केन्या के किसी मंदिर में किसी महिला को ट्रस्टी बनाया गया है। वे इसे युग चेतना के वैश्विक विस्तार का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण अवसर मानती हैं और उसी भाव से सेवा कार्यों में समर्पित हैं। इस पहल का श्रीराम मंदिर समिति के सभी ट्रस्टियों एवं सदस्यों ने हार्दिक स्वागत किया है।

श्रीमती विद्या परिहार परम पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

उल्लेखनीय है कि परम पूज्य गुरुदेव अपनी केन्या की यात्रा के समय श्रीमती विद्या परिहार के घर ठहरे थे। गुरुदेव के इस प्रवास के साथ केन्या में एक तोते द्वारा गायत्री मंत्र बोले जाने का उल्लेख किया जाता है, वह तोता इन्हीं के घर का था।

श्रीमती सावित्री वर्मा : वृद्धावस्था में भी थी सेवा की उमंग

शान्तिकुञ्ज की समर्पित कार्यकर्त्ता, बोकारो, झारखण्ड की मूल निवासी श्रीमती सावित्री वर्मा, धर्मपत्नी स्व. श्री रघुनंदन वर्मा का दिनांक 26 जुलाई 2024 को देहावसान हो गया। वे 88 वर्ष की थीं। विगत 24 वर्षों से वे देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं शान्तिकुञ्ज में चिकित्सालय आदि विभिन्न विभागों में सेवाएँ प्रदान कर रही थीं। उनके सुपुत्र श्री अवधेश वर्मा और अशोक वर्मा भी मिशन के लिए समर्पित हैं।

शान्तिकुञ्ज परिवार ने अखण्ड जप, गुण निवेदन सभा आदि कार्यक्रम आयोजित करउपरोक्त दोनों ही देवात्माओं की शान्ति, सद्गति के लिए प्रार्थनाएँ की, श्रद्धा सुमन समर्पित किए।

भलाई करो, ताकि ईश्वर प्रसन्न हो। दीपक की तरह जलो, ताकि उजाला फैले।

संस्कारधानी जबलपुर में तरु पुत्र महायज्ञ, लगायेंगे एक लाख वृक्षों की पौध

जीवन को बचाने में महती भूमिका निभाएँ

यदि वृक्ष न होते तो शहर गैस का गुब्बारा बन जाते

- आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

14 जुलाई को देव संस्कृति विवि. के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की मुख्य उपस्थिति में माँ नर्मदा तट लम्हेटाघाट पर 5,100 तरुपुत्र महायज्ञ का आयोजन हुआ। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने उपस्थित पर्यावरण मित्रों से जीवन में वृक्षों के महत्त्व पर विस्तृत चर्चा की और उनके योगदान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि यदि पेड़ नहीं होते हैं तो पूरा शहर एक गैस का गुब्बारा बन जाता है, जैसा कि राजधानी दिल्ली की स्थिति हम सबके सामने हैं। वहाँ पर नेत्र रोग, हृदय रोग, चर्म रोगों के मरीजों की संख्या सर्वाधिक हैं।

जीवन को बचाने में महती भूमिका निभाएँ

डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि आज हम प्रकृति को नष्ट कर शहर बसा रहे हैं, पौधे काटकर मंजिलें बना रहे हैं, नदियों और तालाबों को नष्ट करते हुए जा रहे हैं, जिसका नतीजा बहुत भयानक होने वाला है। आज पौधे नहीं होने से पहाड़ दरक रहे हैं और धरती का तापमान बढ़ रहा है। इस वर्ष 0.05 डिग्री तापमान बढ़ जाने से प्राणी मात्र हलकान हुआ, सैकड़ों व्यक्तियों को अपनी जान गँवानी पड़ी, यदि यही तापमान 2 डिग्री तक बढ़ जाए तो प्राणी मात्र का जीवन जोखिम में पड़ जाएगा। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को धरती को अपनी माँ समझकर उसे आसन्न संकट से बचाने के लिए वृक्षारोपण के कार्य में महती भूमिका निभानी चाहिए।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी वृक्ष पूजन करते हुए, वृक्ष पूजन करते परिजन

एक लाख वृक्ष लगाएँगे

तरुपुत्र महायज्ञ में गायत्री परिवार द्वारा एक लाख पौधे लगाने का ही नहीं, उन्हें सुरक्षित और संरक्षित रखने का लक्ष्य रखा गया है। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि श्री सुधीर मिश्रा, पूर्व डायरेक्टर ब्रम्होस एयरोस्पेस डीआरडीओ, विधायक श्री नीरज सिंह, नगर परिषद भेड़ाघाट के अध्यक्ष श्री चतुर सिंह लोधी, पद्मश्री पुरस्कार प्राप्त डॉ. एम.सी. डाबर आदि के द्वारा सभी से पर्यावरण को बचाने का अनुरोध किया गया।

सहयोगियों का आभार

श्री बी.बी. शर्मा ट्रस्टी गायत्री शक्तिपीठ जबलपुर द्वारा नगर परिषद भेड़ाघाट एवं बाहर से आए हुए अतिथियों, जबलपुर, बालाघाट, सिवनी, मंडला, नरसिंहपुर, भोपाल, देवास, इंदौर, बुरहानपुर आदि जिलों से आए कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों एवं समस्त सहयोगियों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त किया गया। उन्होंने कविता तिवारी, गीता डोंगरे द्वारा पहले हुए पौधारोपण के बाद रोपे गए उन पौधों को सुरक्षित रखने में विशेष योगदान के लिए विशेष रूप से धन्यवाद दिया।

मानस भवन में बुद्धिजीवियों का सम्मेलन

आज आवश्यकता है मनुष्य जीवन की गरिमा को पहचान कर अपना दृष्टिकोण बदलने की

जबलपुर के सांसद श्री आशीष दुबे आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का स्वागत करते हुए

जबलपुर में दो दिवसीय प्रवास पर पहुँचे देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने 13 जुलाई को मानस भवन में नगर के बुद्धिजीवियों और भावनाशीलों के बीच 'मानवीय उत्कर्ष' विषय पर अत्यंत प्रेरणादायी उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि मानव जीवन परमात्मा की असीम अनुकंपा से प्राप्त हुआ है। आज आवश्यकता इसकी दिव्यता और गरिमा को पहचानने की है।

शांतिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि आज मनुष्य भौतिक प्रगति की अंधी दौड़ में चला जा रहा है। आज व्यक्ति के पास पद है, पैसा है, गाड़ी है, सारी सुविधाएँ हैं, फिर भी उसके जीवन में संतुष्टि नहीं है, शान्ति नहीं है, क्योंकि उसने जीवन के उद्देश्यों को पहचाना ही नहीं है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने मानवीय उत्कर्ष के लिए जीवन के दृष्टिकोण को बदलने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि किसी भी व्यक्ति का उत्कर्ष या पतन उसके विचारों पर निर्भर होता है। व्यक्ति आदर्शवादी दृष्टिकोण अपना ले तो ऋषि और महात्मा बन जाता है, वहीं यदि व्यक्ति गलत रास्ते पर चला जाए तो डाकू बन जाता है, चोर बन जाता है और अनेक प्रकार के गलत कार्य करने लगता है।

संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि जबलपुर सांसद श्री आशीष दुबे थे, अध्यक्षता महापौर श्री जगत बहादुर सिंह, विनय सक्सेना ने की। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने उन्हें परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट कर सम्मानित किया। जबलपुर शहर के डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, शिक्षक, व्यापारी आदि विभिन्न वर्गों के गणमान्य इस संगोष्ठी में उपस्थित थे।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के जबलपुर प्रवास के कुछ उल्लेखनीय प्रसंग

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि लम्हेटा के घुघरा घाट में माँ नर्मदा का दर्शन-पूजन करते हुए

- आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के जबलपुर पहुँचने पर मध्य प्रदेश के गायत्री परिवार के परिजनों ने हवाई अड्डे पर उनका भव्य स्वागत किया।
- शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने गायत्री शक्तिपीठ मनमोहन नगर पर पहुँचकर दर्शन, पूजन के पश्चात् वहाँ मध्य प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से आए परिजनों से भेंट की।
- 14 जुलाई 2024 को तरुपुत्र महायज्ञ में भागीदारी से पूर्व आदरणीय डॉक्टर चिन्मय पण्ड्या जी ने भेड़ाघाट और लम्हेटा के घुघरा घाट में पहुँच कर माँ नर्मदा का पूजन किया, सभी के मंगल की कामना की।
- आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी प्रवास के अंतिम चरण में सन् 1982 में परम पूज्य गुरुदेव के शुभ आगमन के साक्षी रहे गायत्री शक्तिपीठ श्रीनाथ की तलैया में दर्शन-पूजन करने पहुँचे।
- दो दिवसीय प्रवास में सैकड़ों परिजनों से व्यक्तिगत चर्चा हुई, अनेक देवस्थापनाएँ हुईं, मानवमात्र के उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना की गई।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय का 44वाँ ज्ञानदीक्षा समारोह

ज्ञानदीक्षा नवजीवन प्रदान करने वाला संस्कार है। - श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी, कुलाधिपति देसंविवि

विद्यार्थियों को प्रतीक चिह्न धारण कराते प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री श्री धनसिंह रावत एवं प्रो. सुरेखा डंगवाल कुलपति दून विश्वविद्यालय

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज का 44वाँ ज्ञानदीक्षा समारोह 22 जुलाई 2024 को मुख्य अतिथि उत्तराखण्ड के उच्च शिक्षा एवं सहकारिता मंत्री माननीय श्री धनसिंह रावत, विशिष्ट अतिथि दून विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुरेखा डंगवाल, देसंविवि के कुलपति श्री शरद पारधी, प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की मुख्य उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। इसमें भारत के 15 राज्यों के नवप्रवेशी छात्र-छात्राएँ दीक्षित हुए।

ज्ञानदीक्षा समारोह का शुभारंभ मंच पर उपस्थित गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्वलन, तत्पश्चात् विश्वविद्यालय के कुलगीत गायन से हुआ। कुलपति श्री शरद पारधी ने स्वागत उद्बोधन दिया। शान्तिकुञ्ज के संस्कार प्रकोष्ठ प्रभारी श्री उदयकिशोर मिश्र एवं श्री रामावतार पाटीदार ने ज्ञानदीक्षा का वैदिक विधि-विधान सम्पन्न कराया। कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने कार्यक्रम से वर्चुअली जुड़ते हुए नवप्रवेशी विद्यार्थियों को वैदिक सूत्रों के माध्यम से शिक्षा के उद्देश्य का बोध कराया, अनुशासन के पालन और वर्जनाओं से बचने के संकल्प कराए।

समारोह के अंतिम चरण में मंचासीन गणमान्यों ने चयनित विद्यार्थियों को देसंविवि के प्रतीक चिह्न प्रदान किए। धन्वन्तरी, अनाहत आदि पत्रिकाओं का विमोचन किया। इस अवसर पर देसंविवि के कुलसचिव श्री बलदाऊ जी, समस्त आचार्यगण, शान्तिकुञ्ज परिवार के वरिष्ठ सदस्य तथा देश-विदेश से आये विद्यार्थी, उनके अभिभावक तथा पत्रकार बंधु उपस्थित रहे।

नवजीवन प्रदान करने वाला संस्कार

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी इस समारोह में वर्चुअली शामिल हुए। उन्होंने ज्ञानदीक्षा संस्कार को नवजीवन प्रदान करने वाला जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पर्व बताया। नवप्रवेशी विद्यार्थियों को ज्ञानदीक्षा के सूत्र समझाये, उन्हें महान लक्ष्य के लिए समर्पित रहने और अनुशासित होकर विद्यार्जन करने के लिए दीक्षित किया।

ज्ञान के उदय का पर्व है ज्ञानदीक्षा

माननीय प्रति कुलपति जी ने ज्ञानदीक्षा समारोह को ज्ञान के उदय का पर्व बताया। उन्होंने कहा कि ज्ञानदीक्षा का अर्थ हमारे व्यक्तित्व के अंदर प्रतिष्ठित हो तो सकारात्मक परिवर्तन संभव है, बदली हुई मनःस्थिति के अनुरूप परिस्थितियाँ अनुकूल होती जाती हैं।

राज्य के सभी विश्वविद्यालयों में हों ज्ञानदीक्षा समारोह

माननीय मंत्री श्री धनसिंह रावत ने ज्ञानदीक्षा संस्कार समारोह की सराहना करते हुए इसे मानवीय गरिमा और शिक्षा के उद्देश्य का बोध कराने वाला समारोह बताया। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से रैगिंग जैसी कुप्रथाएँ समाप्त हो सकती हैं। इसे उत्तराखण्ड के सभी विश्वविद्यालयों में आयोजित किया जाना चाहिए। उन्होंने इसके लिए मार्गदर्शन प्रदान करने का अनुरोध देव संस्कृति विश्वविद्यालय से किया। उन्होंने भारत की नई शिक्षा नीति को विद्यार्थियों को संस्कृति की जड़ों से जोड़ने और अनुशासित रहना सिखाने वाली शिक्षा नीति बताया।

संस्कृति दूत बनें, दुनिया में वसुधैव कुटुम्बकम का संदेश पहुँचायें

प्रो. सुरेखा डंगवाल ने कहा कि भारत की पूर्व शिक्षा पद्धति में अनुपस्थित जिन कड़ियों को जोड़ने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लाई गई है, उस उद्देश्य को देव संस्कृति विश्वविद्यालय अपने प्रारंभिक दिनों से ही पूरा कर रहा है। उन्होंने विद्यार्थियों को भारत की महान संस्कृति के दूत बनकर पूरी दुनिया में वसुधैव कुटुंबकम का भाव विकसित करने की प्रेरणा दी।

दिवंगत देवात्मा को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री रामचंद्र मुकाती, खण्डवा। मध्य प्रदेश

खण्डवा के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री रामचंद्र मुकाती का 20 जुलाई 2024 को देहावसान हो गया। 57 वर्षीय श्री रामचंद्र जी पूरी तरह मिशन के लिए समर्पित थे, गुरुकार्य करते हुए ही उन्होंने जीवन की अंतिम श्वांस ली, पावन गुरु पूर्णिमा के दिन उनकी स्थूल काया पंच तत्त्व में विलीन हुई।

स्व. श्री रामचंद्र मुकाती गायत्री परिवार ट्रस्ट खण्डवा के ट्रस्टी और गायत्री धाम सिरसौद गोशाला के व्यवस्थापक थे। यहीं से कन्या कौशल का विराट अभियान चलाया जा रहा है, जिसमें जन्मशताब्दी वर्ष तक देश की सवा लाख कन्याओं को मिशन से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है।

स्व. श्री रामचंद्र जी ने पिछले लगभग चार माह से अपने दो बेटे और दो बेटियों को सारा पारिवारिक भार सौंपकर स्वयं को पूरी तरह मिशन के लिए समर्पित कर दिया था।

बड़ाई सुनने का लालच न करो, ढिंढोरा न पीटो, न पिटवाओ। ढोंगी लोगों की तरह मंच सजाने और बढ़-चढ़कर बातें करने का प्रयत्न न करो।

गुरु पूर्णिमा पर्व पर श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का संदेश

जो बुद्धि से बोध की यात्रा कराये, वही सद्गुरु होते हैं

युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज में पावन गुरु पूर्णिमा पर्व का तीन दिवसीय समारोह परम्परागत श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। श्रद्धेया शैल जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने 21 जुलाई 2024 को अखिल विश्व गायत्री परिवार के करोड़ों अनुयायियों का प्रतिनिधित्व करते हुए परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के रूप में अवतरित युगान्तरीय चेतना का भावभरा पूजन किया। शान्तिकुञ्ज में उपस्थित लगभग 15 से 20 हजार श्रद्धालु, साधकों ने गुरु

स्मारकों पर अपनी संकल्प श्रद्धाञ्जलि समर्पित की। श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी ने अपने संदेश में परम पूज्य गुरुदेव के विराट व्यक्तित्व का स्मरण कराते हुए उन्हें गुरुरूप में वरण करने के सौभाग्य का बोध कराया। श्रद्धेया शैल जीजी ने अपने संदेश का सार प्रस्तुत करते हुए कहा कि गुरु पूर्णिमा का एक ही संदेश है-समर्पण और सतत स्मरण के साथ श्रद्धा को निरंतर बढ़ाते रहना। तीन दिनों में परम्परागत 24 घण्टे का अखण्ड जप, यज्ञ, संस्कार आदि के अलावा जीवन को सत्पथ की दिशा देने वाले और युगधर्म का बोध कराने वाले कई कार्यक्रम हुए।

गुरु पूर्णिमा पर्व मनाने शान्तिकुञ्ज में उमड़ा श्रद्धालुओं का सैलाब : बायें सत्संग भवन में दीक्षा लेते लोग, दायें-चैतन्य तीर्थ क्षेत्र में पर्व संदेश सुनते श्रद्धालु

जनजागरण शोभायात्रा

तीन दिवसीय गुरु पूर्णिमा महापर्व के दूसरे दिन गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्जवासी कार्यकर्त्ताओं और देश-विदेश से विभिन्न शिविरों में पधारे भाई-बहिनों ने भव्य जनजागरण शोभायात्रा निकाली। शंख, मंजीरा एवं बैण्ड आदि वाद्ययंत्रों की धुनों ने लोगों के उत्साह को कई गुना बढ़ाया। यह शोभायात्रा शान्तिकुञ्ज से आरंभ होकर हरिपुर कलाँ एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय में अलख जगाते हुए पुनः शान्तिकुञ्ज लौटी। गुरु स्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' के समक्ष प्रेरक उद्बोधन, ओजस्वी जयघोष, कन्याओं द्वारा आरती जैसे कार्यक्रमों के साथ शोभायात्रा का समापन हुआ। श्री श्याम बिहारी दुबे जी ने निजी आकांक्षाओं को श्रीगुरु चरणों में समर्पित कर गुरुकार्य में समय देने की प्रेरणा दी।

एक शाम गुरुवर के नाम

19 जुलाई को सायंकाल की सत्संग सभा में विशेष भजन संध्या का आयोजन किया गया। शान्तिकुञ्ज के अंतेवासी कार्यकर्त्ताओं के बच्चों (गायत्री विद्यापीठ के विद्यार्थियों), महिला मण्डल की युगगायिका बहिनों और संगीत विभाग के युग गायकों ने अपनी हृदयस्पर्शी प्रस्तुतियों से जीवन में गुरु की महिमा का स्मरण कराया। उनके भावभरे रोमांचित कर देने वाले गीतों ने परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के प्रति श्रद्धा-समर्पण के भाव को बल दिया।

प्रेरक संदेश

19 और 20 जुलाई को गुरु पर्व के निमित्त विशेष उद्बोधन हुए। पर्व की पूर्व संध्या पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने 'पूर्णता का करें हम वरण' विषय से अखिल विश्व गायत्री परिवार को अपना संदेश दिया। उन्होंने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी जैसी अवतारी चेतना का गुरुरूप में प्राप्त होना जीवन का परम सौभाग्य है। हम सभी को इसका लाभ लेते हुए अपने जीवन को श्रेष्ठ उद्देश्यों के लिए

देव संस्कृति विवि. में पहुँची जनजागरण यात्रा

पर्व की पूर्व संध्या पर मंचासीन शान्तिकुञ्ज के वरिष्ठ प्रतिनिधि और युगगायकों की टोली

समर्पित कर देना चाहिए।

इससे पूर्व श्री योगेन्द्र गिरि जी ने परम पूज्य गुरुदेव के जीवन दर्शन के विविध आयामों को उद्घाटित किया। श्री वीरेन्द्र तिवारी जी ने जन्म शताब्दी वर्ष के दायित्व और योजनाओं की चर्चा की।

दीप महायज्ञ

गुरु पर्व की सायं विशेष दीप महायज्ञ का आयोजन हुआ, जिसका संचालन शान्तिकुञ्ज की ब्रह्मवादिनी बहिनों ने किया। बहिनों ने अपने संदेश में परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी को समस्त मानवता को ऊर्जा और प्रकाश देने वाले सूर्य के समान बताया और दीपक बनकर उनका अनुसरण करने की प्रेरणा दी। पूरे कार्यक्रम में जन्म शताब्दी वर्ष को लक्ष्य कर सक्रियता के संकल्प उभरते रहे।

चान्द्रायण व्रत साधना संकल्प

51 लाख वृक्षों की पौध लगाएगा गायत्री परिवार

अखिल विश्व गायत्री परिवार के लिए गुरु पूर्णिमा से श्रावणी पूर्णिमा (रक्षाबंधन) तक का एक माह विशेष है। इन दिनों परिजन दो प्रमुख अभियानों में भागीदारी करते हैं। (1) चांद्रायण व्रत साधना और (2) वृहद वृक्षारोपण अभियान। यह दोनों वैश्विक अभियान हैं, जिनमें हजारों साधकों की भागीदारी होती है।

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर पर्व पूजन के पश्चात् परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की सूक्ष्म चेतना की साक्षी में श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने चांद्रायण व्रत साधना आरंभ कर रहे साधकों को ऑनलाइन साधना संकल्प कराया। इसके साथ ही उन्होंने बृहद् वृक्षारोपण अभियान के शुभारंभ की घोषणा भी की। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष वृक्षारोपण मास में अखिल विश्व गायत्री परिवार लगभग 51 लाख वृक्षों की पौध लगा रहा है।

युग साहित्य विमोचन

- **शान्तिकुञ्ज पञ्चांग 2025**
- **हिन्दी पुस्तक**
  - 'जागो और जगाओ' : व्यसन मुक्ति मार्गदर्शिका
  - व्यसन मुक्ति पर गुरुदेव द्वारा लिखित पुस्तकों का सेट
- **बांग्ला पुस्तक**
  - गुरुदेवेर ज्ञान संपत
  - समग्रो बिस्वेर तोरे भारतेर अजस्रो अनुदान

(अनुवाद एवं प्रकाशन सुश्री कल्पना घोष, कोलकाता)

- **बांग्ला टेबल केलेण्डर**
- **इलेक्ट्रॉनिक मीडिया डिपार्टमेन्ट द्वारा**
  - शार्ट फिल्म - दिशा बोध लघुनाटिका
  - ऑडियो बुक - चेतना की शिखर यात्रा
  - पेन ड्राइव पर गुरु परक प्रज्ञागीत
  - मुम्बई अश्वमेध महायज्ञ की विशेष डॉक्यूमेंट्री

गुरु पूर्णिमा पर्व का संदेश

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

सद्गुरु की सामर्थ्य

हर गुरु सद्गुरु नहीं होता। जो बुद्धि से बोध की यात्रा कराते हैं, वही सद्गुरु होते हैं। चेतना को प्रकाशित करने की सामर्थ्य केवल सद्गुरु में ही होती है। सद्गुरु जीवन विद्या सिखाते हैं। वे शिक्षा और विद्या का समन्वय कर हमें आध्यात्मिक बना देते हैं। जीवन के अलौकिक स्वरूप को देखने की सामर्थ्य हमें गुरु प्रदान करते हैं।

सद्गुरु की प्राप्ति कैसे हो?

यदि पात्रता हो तो सद्गुरु को ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं होती, वे स्वयं ही मिल जाते हैं। गुरु को देखने के लिए ज्ञान की, श्रद्धा की आँख चाहिए। अभिमान से समर्पण की ओर बढ़ते हैं, तब सद्गुरु के साथ संबंध बनते हैं।

सद्गुरु को पाने के लिए पहली आवश्यकता शिष्य के अंदर उच्चतर तत्त्व को पाने की जिज्ञासा है। दूसरी आवश्यकता अनुशासन के साथ आत्म परिमार्जन की होती है। उसके बाद संशय से समाधान की ओर चरण बढ़ते हैं। जैसे-जैसे व्यक्ति का आत्माभिमान विसर्जित होता जाता है, वैसे-वैसे शिष्य पर गुरु के आशीष-अनुदान बरसते जाते हैं।

श्रद्धेया शैल जीजी

श्रद्धा के आरोपण का दिन है गुरु पूर्णिमा

गुरु पूर्णिमा श्रद्धा के आरोपण का दिन, ज्ञान के पूजन का दिन, आत्म विश्लेषण का दिन है। माँ बच्चे को जन्म देती है, लेकिन जीवन जीना गुरु ही सिखाते हैं।

गुरु अपने शिष्य के गुण और दोषों को अच्छी तरह समझते हैं, वह दोषों को दूर करते हैं और गुणों का अभिवर्धन करते हैं। वे अपने शिष्य की श्रद्धा की परीक्षा भी लेते हैं और उसी आधार पर शिष्यों को गुरु के अनुदान भी मिलते हैं। समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी को सिंहनी का दूध लाने के लिए कहा, राजा दिलीप को एक गाय की जान बचाने के लिए सिंह के समक्ष स्वयं को प्रस्तुत करना पड़ा, यह उनकी श्रद्धा की परीक्षा ही थी।

पूज्य गुरुदेव की चाह है कि हम हीरे बनें

जिनका जीवन अपने गुरु के आदेशों के पालन के लिए समर्पित हो जाता है, वह गुरु के अनुदानों को पाने का हकदार हो जाता है। परम पूज्य गुरुदेव ने समाज के लिए समर्पित 10,000 हीरों के हार की चाह रखी थी। आज मैं अपने भाइयों और बहिनों से यह प्रार्थना करूँगी कि उनके मन में यह संकल्प उभरे कि परम पूज्य गुरुदेव और परम वंदनीया माताजी ने जिन हीरकों के हार की कामना की थी, उस हीरक हार के लिए पहले हीरे हम बनेंगे, उनके संकल्पों को पूरा करने के लिए हर पल लगे रहेंगे।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

अपने को जानो, मन को थामो, ईश्वर को पहचानो

गुरु पूर्णिमा अपूर्णता से पूर्णता की यात्रा का पर्व है। जीवन में पूर्णता गुरुकृपा से ही आती है। यह तभी संभव हो पाता है, जब व्यक्ति अपने को जाने, मन को थामे, ईश्वर को पहचाने, अहंकार को त्यागे, अपने भीतर के देवता को जगाए।

इस जीवन में तृप्ति, संतोष, पूर्णता तभी आती है जब हम अपने भगवान से मिल पाते हैं। नहीं तो जिंदगी की यात्रा अधूरी की अधूरी बनी रहती है। परम पूज्य गुरुदेव और परम वंदनीया माताजी हमारे माता-पिता हैं। हम परेशान इसलिए हैं कि दुनिया के मेले में हमसे अपने माता-पिता की अंगुली छूट गई है। जब मेले में किसी बच्चे की अंगुली उसके माता-पिता से छूट जाती है तो उसे न मिठाइयों में रस आता है, न खिलौनों में और न झूले में। उसे चैन अपने माता-पिता से मिलने के बाद ही मिलता है। उसी प्रकार हमें अपने गुरुदेव-माताजी की अंगुली थामने के बाद ही चैन मिलेगा। वह हमें लेने आएँगे, पर तब जब हमें यह याद हो कि हम कौन हैं?

इस गुरु पूर्णिमा का यही संदेश है कि अपने को जानें, मन को थामें, अहंकार को यहीं छोड़ दें, गुरुदेव को गले लगा कर जाएँ। आप अकेले आए होंगे, पर जाते समय गुरुदेव-माताजी भी आपके साथ जाएँगे। वे आपके जीवन को संरक्षित करेंगे, यदि आपको याद हो कि आप कौन हैं?

गुरु पर्व पर हुई भजन संध्या में गुरु गरिमा का बोध कराते गायत्री विद्यापीठ के बच्चे

शान्तिकुञ्ज के अंतवासी कार्यकर्त्ताओं द्वारा 3 अगस्त को हरिद्वार नगर में हरीतिमा संवर्धन रथ के साथ वृक्ष कांवड़ शोभायात्रा निकाली गई

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक**- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार भेजने के लिए
ई-मेल : news@awgp.org

Publication date: 12.08.2024
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

गुरु पूर्णिमा पर आत्मोत्थान की प्रेरणाएँ एवं उत्साहवर्धक कार्यक्रम

गुरु के बताए मार्ग पर चलना ही सच्ची गुरु दक्षिणा है

देवास। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ साकेत नगर पर गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व के उपलक्ष्य में 20 एवं 21 जुलाई को अखण्ड जप, दीपयज्ञ एवं पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ सहित विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न हुए। दीक्षा, यज्ञोपवीत, विद्यारंभ, पुंसवन सहित विभिन्न संस्कार निःशुल्क सम्पन्न हुए। जिला युवा समन्वयक प्रमोद निहाले ने कहा कि गुरु के बताए मार्ग पर चलते हुए समाज की सेवा करना ही सच्ची गुरु दक्षिणा है।

- गायत्री परिवार की गतिविधियों में श्री संतोष शर्मा के अतुलनीय योगदान की चर्चा हुई और समारोह में उनके उपस्थित न होने के कारण उन्हें उनके घर जाकर सम्मानित किया गया।
- शक्तिपीठ से बड़ी संख्या में परिजनों ने वृक्षारोपण के संकल्प के साथ सहयोग राशि देकर वृक्ष प्राप्त किए।
- 48 परिजनों ने गुरु दीक्षा ली।

गायत्री प्रज्ञापीठ विजयनगर में

गायत्री प्रज्ञापीठ विजयनगर में भी पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ गुरु पूर्णिमा पर्व मनाया गया। प्रज्ञापीठ की संरक्षिका दुर्गा दीदी ने पूज्य गुरुदेव के साथ शिष्यों के नैतिक संबंधों का स्मरण कराया। यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् हुई अपनों से अपनी बात में वृक्ष गंगा अभियान पर विशेष चर्चा हुई।

प्रकाशित हुए बच्चों के विचार और संस्कार

निबंध प्रतियोगिता

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

संस्कार युक्त शिक्षा में अग्रणी गायत्री विद्या मंदिर (हिन्दी माध्यम) कंचन बाग में गुरूपूर्णिमा का पावन पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया। शाला की वरिष्ठ शिक्षिका रमा तिवारी ने बच्चों को जीवन में गुरु का महत्त्व बताया एवं उनका सदैव सम्मान करने की प्रेरणा दी। बच्चों ने गुरुजनों के चरण स्पर्श कर उनका आशीर्वाद लिया।

गुरु पर्व के उपलक्ष्य में कक्षा नवमी से बारहवीं तक के विद्यार्थियों के बीच निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और विजेताओं को सम्मानित भी किया गया।

निबंध का विषय था ''जीवन रूपी सागर में सीप का मोती है गुरु''। गायत्री शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष श्री बृज किशोर सुरजन सहित समस्त अधिकारी, शिक्षकों ने बच्चों को आशीर्वाद देकर उनका उत्साहवर्धन किया।

100 गुरु दीक्षा और 32 बटुकों के यज्ञोपवीत संस्कार, 29 यूनिट रक्तदान

उज्जैन। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन में गुरु पूर्णिमा पर्व पर 100 से अधिक श्रद्धालुओं ने दीक्षा ली और 32 बटुकों के यज्ञोपवीत संस्कार कराए गए। श्री देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ने दीक्षा संस्कार सम्पन्न कराते हुए कहा कि गुरु दीक्षा मात्र कर्मकांड नहीं, एक सूक्ष्म आध्यात्मिक प्रयोग है। इस संस्कार में शिष्य गुरुरूपी समर्थ सत्ता में अपनी श्रद्धा आरोपित कर निरंतर महानता की ओर अग्रसर होता जाता है। उन्होंने कहा कि यह प्रकारांतर से मानव में देवत्व को जगाने का, ईश्वर के साथ साझेदारी करने का एक विशिष्ट प्रयोग है।

गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में गुरुदेव-माताजी के प्रतीक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' का अभिषेक व पूजन किया गया। इसके बाद 9 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में लगभग 400 श्रद्धालुओं ने आहुतियाँ समर्पित कीं।

शक्तिपीठ पर गुरुदीक्षा संस्कार एवं रक्तदान शिविर की झाँकी

रक्तदान एवं स्वास्थ्य परीक्षण शिविर

गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन में गुरु पूर्णिमा के दिन रक्तदान एवं स्वास्थ्य परीक्षण का कार्यक्रम रखा गया था। इसमें 29 यूनिट रक्त दान हुआ। युवाओं ने रक्तदान कर आनंद और संतोष की अभिव्यक्ति की तथा जरूरत पड़ने पर रक्तदान करते रहने का आश्वासन दिया।

डॉ. विनोद गुप्ता के मार्गदर्शन में चार चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा 100 से अधिक लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण भी किया गया।

90 विद्यार्थियों का विद्यारंभ संस्कार

अमरेली। गुजरात

श्री गायत्री ज्ञान मंदिर अमरेली द्वारा गुरु पूर्णिमा की पूर्व संध्या पर स्थानीय रूपायतन विद्यालय में 90 विद्यार्थियों का विद्यारंभ संस्कार कराया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों के माता-पिता भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। उन्होंने इस वैदिक परम्परा की प्रशंसा की, जिससे विद्यार्थियों को उत्कृष्ट जीवन जीने की प्रेरणा और ऊर्जा मिलती है। श्री अतुलभाई पण्ड्या, हरेशभाई जानी और बिपिनभाई भारड द्वारा यह संस्कार सम्पन्न कराया गया।

गुरु पर्व पर सामूहिक विद्यारंभ संस्कार समारोह

15 वर्षों की परंपरा

गायत्री परिवार अमरेली विगत 15 वर्षों से गुरु पूर्णिमा के दिन इस विद्यालय में विद्यार्थियों का सामूहिक विद्यारंभ संस्कार करा रहा है, जिसके उत्कृष्ट परिणाम भी दिखाई देते हैं।

जिला स्तरीय समारोह

50 गुरु दीक्षा एवं 300 विद्यारंभ संस्कार हुए

चित्तौड़गढ़। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ चित्तौड़गढ़ में मनाए गए गुरु पूर्णिमा पर्व में पूरे चित्तौड़गढ़ जिले से आये 1000 से अधिक गायत्री परिजनों ने भाग लिया। पंच कुंडीय यज्ञ हुआ, 50 लोगों ने गुरु दीक्षा ली। पर्व पूजन के बाद श्री जगदीश जोशी ने गुरु महिमा का गुणगान किया। उन्होंने कहा कि आचार्य श्रीराम शर्मा जी के शिष्य के रूप में घर-घर जाकर उनके विचार एवं संस्कारों को फैलाना, सत्साहित्य के स्वाध्याय के लिए प्रेरित करना, जन-जन में देवत्व जगाना गायत्री परिवार से जुड़े परिजनों की सर्वोत्तम गुरुदक्षिणा है।

जन-जन में देवत्व जगाना ही सच्ची गुरु दक्षिणा

शक्तिपीठ चित्तौड़गढ़ में बच्चों का विद्यारंभ संस्कार और यज्ञ करते परिजन

श्री रमेश चंद्र पुरोहित ने बताया कि गुरु पूर्णिमा के अवसर पर लक्ष्य सेंट्रल एकेडमी, बस्सी में 20 जुलाई को यज्ञ के साथ गुरु दीक्षा संस्कार कराया गया। इसमें श्री शंकर लाल सालवी और श्री देवी लाल गूजर ने कक्षा पाँचवीं से बारहवीं तक के 300 से अधिक छात्र-छात्राओं एवं स्टाफ का गुरु दीक्षा संस्कार कराया।

शासकीय कन्या महाविद्यालय में गायत्री परिवार के प्रतिनिधि का सम्मान

बड़वानी। मध्य प्रदेश

शासकीयकन्यामहाविद्यालय, बड़वानी में नोडल अधिकारी डॉ. स्नेहलता मुझाल्दा के द्वारा प्राचार्य डॉ. वंदना भारती एवं प्राध्यापक डॉ. एनएल गुप्ता के मार्गदर्शन में गुरु पूर्णिमा उत्सव का आयोजन किया गया। गायत्री परिवार की ओर से मुख्य वक्ता श्री महेन्द्र भावसार ने इसे संबोधित करते हुए गुरु-शिष्य परम्परा के आदर्श प्रस्तुत किए। उन्होंने युगऋषि परम पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की ''अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।'' और ''हम सुधरेंगे, युग सुधरेगा'' जैसे सूत्रों को जीवन का आदर्श बनाकर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा विद्यार्थियों को दी।

विद्यालय द्वारा सम्मानित किए गये श्री महेन्द्र भावसार

डॉ. स्नेहलता मुझाल्दा ने भारतीय ज्ञान परम्परा पर प्रकाश डाला। डॉ. जगदीश मुजाल्दे ने शिक्षा में नैतिकता के समावेश पर बल दिया। गायत्री परिवार की ओर से श्री महेन्द्र भावसार को परम पूज्य गुरुदेव के संदेशवाहक के रूप में शॉल, श्रीफल भेंट कर सम्मान किया गया।

एक पेड़ माँ के नाम

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ गोमती नगर लखनऊ के परिसर में 'एक पेड़ माँ के नाम' कार्यक्रम के अंतर्गत 108 पौधों का वितरण किया गया। उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्य वन संरक्षक श्री संजीव कुमार एवं प्राणी उद्यान की डायरेक्टर एवं मुख्य संरक्षक श्रीमती अदिति शर्मा ने उद्यानों में लगाने हेतु यह पौधे वितरित किए। उन्होंने भी शक्तिपीठ परिसर में चंदन, रुद्राक्ष एवं सिंदूर के पौधे लगाए।

श्री संजीव जी ने कहा कि प्रकृति के संतुलन एवं सौंदर्य को बनाए रखने के लिए आज अधिक से अधिक पौधे लगाने की आवश्यकता है। श्रीमती अदिति शर्मा ने पौधों की देखभाल कैसे की जाए, कौन से पौधे लगाए जाएँ, यह जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन श्री अरुण कुमार श्रीवास्तव ने किया।

सिद्धि गणेश मंदिर में वृक्षारोपण

चित्तौड़गढ़। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ चित्तौड़गढ़ ने वृक्षगंगा अभियान के अंतर्गत नगर के सिद्धि गणेश मंदिर में पौधारोपण किया। मंदिर के संतश्री ने इस पुनीत कार्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि आज के समय में वृक्षारोपण से अधिक पुण्यदायी कोई दूसरा कार्य नहीं है। शक्तिपीठ के प्रबंध ट्रस्टी श्री रमेश चंद्र पुरोहित ने वृक्षारोपण के महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने इस अवसर पर सभी लोगों से कम से कम एक पौधा लगाकर उसे पूर्ण विकसित करने का आह्वान किया, संकल्प दिलाया।

पाँच कुण्डीय शिव गायत्री महायज्ञ

उदयपुरवाटी, नीम का थाना। राजस्थान

ईशरानाथ धाम धनावता में पाँच कुंडीय शिव गायत्री महायज्ञ हुआ। ईशरानाथ धाम के महंत सांवताराम एवं एडवोकेट मोतीलाल सैनी यज्ञ के मुख्य यजमान थे। यज्ञ में एक दर्जन से भी अधिक गाँवों से आए हुए श्रद्धालुओं ने भाग लिया। श्री बजरंग लाल सोनी तथा श्री प्रहलाद राम गुर्जर ने यज्ञ संचालन करते हुए श्रद्धालुओं को उपासना, साधना, आराधना के तीन चरण अपनाते हुए यज्ञभाव को जीवन में आत्मसात करने की प्रेरणाएँ दीं।